bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org

संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 अंक – 18

वर्तमान कमल ज्योति

₹10

लखनऊ
14 अप्रैल
स्थान : डा0

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती
सामाजिक समरसता दिवस
विचार संगोष्ठी
अप्रैल, 2022 समय : शाम 3 बजे
विश्वेश्वरैया प्रेक्षागृह लखनऊ
जनता पार्टी लखनऊ

वर्तमान

कमल ज्योति

संरक्षक
श्री स्वतंत्र देव सिंह

सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी

प्रबन्ध सम्पादक
राजकुमार

प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह

पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

'एक भारत-श्रेष्ठ भारत-आत्मनिर्भर भारत' के स्वप्नद्रष्टा आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को प्रथम 'लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार' से सम्मानित किए जाने पर हम सभी हर्षित हैं।
लोक-कल्याण में सतत रत आदरणीय प्रधानमंत्री जी को समस्त प्रदेश वासियों की ओर से ढेरों बधाई- योगी आदित्यनाथ

सम्पादकीय

यही तो तंत्र है अपना, शुभंकर मंत्र है अपना

विधानसभा चुनाव अपने अवसान की ओर था जब एक दिन दोपहर में एक प्रमुख कार्यकर्त्ता की आवाज भाजपा के अचल (पीएनटी फोन) दूरभाष पर गूंजी। बस दो दिन और अब आ गये आराम करने के दिन। इस भावना के साथ भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश के लगभग सभी लोग अपने–अपने स्तर पर रोमांचित थे और दर्शन, पूजन, पर्यटन की योजना बना रहे थे। लेकिन, संगठन तो संगठन ही है। जहां पर अपार कार्य की संभावनाएं हर समय चलती रहती है। अचानक संभावनाएं सामने मिल गईं....।

भारतीय जनता पार्टी सतत गतिमान संगठन है। इसलिये प्रदेश के सभी कार्यकर्त्ता विधान परिषद चुनाव में तन–मन–धन के साथ सक्रिय हो गये। एक महीने के सतत परिश्रम के बाद उत्तम परिणाम मिला और भाजपा एक और चुनाव को जीतने की कीर्तिमान से ओतप्रोत हो गई। इतनी जीत के बाद भाजपा कार्यकर्त्ता एक बार फिर से आराम की अवस्था में आ ही रहे थे कि अचानक कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण की चर्चा आरंभ हो गई। इसके साथ ही प्रदेश से बूथ तक भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्त्ता पार्टी के लिये अपने अंशदान को एकत्र करने के अभियान में प्राण–प्रण के साथ लग गया। माइक्रो डोनेशन और कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण दो पार्टी के ऐसे अभियान है जिनके द्वारा भारतीय जनता पार्टी समाज के भीतर एक ऐसे दीपक को जलाये रखने का सतत प्रयास करती है जिससे राजनीति की दिशा और दशा दोनों ही एक नये पथ को प्रदर्शित करते हैं। यह उस विचार को सामने लाता है कि भारत के सबसे बड़े राज्य में एक पार्टी की लगातार दूसरी बार सरकार बनी है और उसके कार्यकर्त्ता पांच रुपये से आरंभ करके अपनी सामर्थ्य के अनुसार एक हजार रुपये तक का अंशदान पार्टी को चलायमान बनाये रखने के लिये कर रहे हैं। समाज के अंदर इसका अर्थ बहुत दूर तक जाता है कि सत्ता में आने के बाद भी पार्टी अपने कार्यकर्त्ता को यह भूलने नहीं देती है कि हम सत्ता के लिये समाज और राष्ट्र के हित में कार्य करने वाले संगठन है। हम पार्टी को इंमानदारी के साथ सतत गतिशील रखने वाले दल हैं न कि हम सत्ता का दुरुपयोग करने वाले दलों से अलग समा की चिंता करत हैं। इसलिये समाज हमारी चिंता करता है।

और ऐसा क्या न हो... भारत का जीवन एक अनवरत यात्रा है और हम सतत यात्रा के मध्य हर पडाव में सोचते कुछ हैं और लेकिन गतिशीलता के कारण पहुंचते कही और हैं। हम पडाव का चुनाव भी करते हैं, उस और चलने की तैयारी भी करते रहते हैं, चलते भी हैं और हर लक्ष्य पर पहुंच जाते हैं। यह निश्चितता ऐसे ही नहीं मिली है इसके लिये यात्रा में सुविधाएं या कठिनाइयां दोनों ही रूपों को हमने देखा है। मार्ग मे ऊंच–नीच, लम्बे प्रतीक्षा के दुखदाई पल तो कभी सुखद अनुभव। कभी सुखद तो कभी दुखद पल। सभी याद आते हैं। कितनी विचित्रताएं हैं पार्टी की इस यात्रा में। कल जिसकी प्रतीक्षा हम करते रहते हैं, कभी सबकुछ हमारी मुट्ठी में होता लगता है तो हम आसमां में एक और चिरतंन यात्रा कर रहे हैं। और हम फिर चल पडते हैं उसी ओर चाहे मिले या न मिले। अर्थात **चरैवेति ... चरैवेति चरैवेति!**
चरैवेति–चरैवेति, यही तो मंत्र है अपना ।

नहीं रुकना, नहीं थकना, सतत चलना सतत चलना ।
हमारी प्रेरणा है भास्कर, जिनका रथ सतत चलता।
युगों से कार्यरत है जो, सनातन है प्रबल ऊर्जा।
गति मेरा धरम है जो, भ्रमण करना भ्रमण करना।
यही तो मंत्र है अपना, शुभंकर मंत्र है अपना ॥

इसलिये सत्ता का सुखद पल यदि आ भी जाए, तो चाहे वह वास्तविक हो या काल्पनिक,उसे अनुभव भी करना चाहिए और जीना चाहिए लेकिन स्वयं को सदैव गतिशील बनाये रखना चाहिये तभी मार्ग में सारे कंटक दूर रहते हैं और हम मार्ग के प्रवाह के साथ सतत गतिमान चिरंतन राष्ट्र की कामना के साथ आगे बढ़ते रहते हैं। क्योंकि हमारा स्पष्ट अनुभव हैं कि हम पार्टी संगठन के लोग अनुकूलता और प्रतिकूलता के पगडंडी पर चलते जाए, चलते जाए, चलते जाए हमें हमारी .मंजिल तो स्वयं आगे बढ़कर अपना ती रहेगी। बस कर्म को ब्रम्ह मानकर आना कार्य पूरा करें लक्ष्य अपने आप प्राप्त हो जायेगा। यही संगठन का मूलमंत्र है और भाजपा इसी मंत्र के साथ सतत गतिमान है गतिमान थी और गतिमान रहेगी।

akatri.t@gmail.com

मानवता के प्रति भारत का ''सेवा यज्ञ''

साधक राजकुमार

भारत में जब एनआरसी पर अधिनियम में संशोधन हुआ तब अनेक प्रकार के प्रश्न खड़े हुए। लेकिन आज इसके सुफल आने लगे हैं। नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2019 जिसके द्वारा सन 1955 का नागरिकता कानून को संशोधित करके यह व्यवस्था की गयी है कि 31 दिसम्बर सन 2014 के पहले पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से भारत आए हिन्दू, बौद्ध, सिख, जैन, पारसी एवं ईसाई को भारत की नागरिकता प्रदान की जा सकेगी। इस विधेयक में भारतीय नागरिकता प्रदान करने के लिए आवश्यक 11 वर्ष तक भारत में रहने की शर्त में भी ढील देते हुए इस अवधि को केवल 5 वर्ष तक भारत में रहने की शर्त के रूप में बदल दिया गया था। इस पर पहल करते हुए उ0प्र0 सरकार ने 63 परिवारों को पुर्नवास की व्यवस्था किया।

इस अधिनियम के द्वारा पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान से 31 दिसम्बर 2014 के पूर्व भारत आए हुए हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी, ईसाई को भारत की नागरिकता देने की व्यवस्था की गयी है।

नागरिकता संशोधन बिल को लोकसभा ने 10 दिसम्बर 2019 को तथा राज्यसभा ने 11 दिसम्बर 2019 को परित कर दिया था। 12 दिसम्बर को भारत के राष्ट्रपति ने इसे अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी और यह विधेयक एक अधिनियम बन गया। 10 जनवरी 2020 से यह अधिनियम प्रभावी भी हो गया है। 20 दिसम्बर 2019 को पाकिस्तान से आये 7 शरणार्थियों

को भारतीय नागरिकता देकर इस अधिनियम को लागू भी कर दिया गया था।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में पाकिस्तान, बांग्लादेश व अफगानिस्तान से आए हुए अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को भारत में नागरिकता देने और उनके पुनर्वासन हेतु एक्ट पास किया गया, उसी का सुफल है कि Government of UP समयबद्ध ढंग से हिंदू परिवारों के पुनर्वासन की कार्यवाही को आगे बढ़ा रही है।

पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित हुए हिंदू बंगाली परिवारों को अपने मूल देश में ही प्रताड़ना का दंश झेलना पड़ा, मगर भारत ने उन्हें न केवल शरण दी, बल्कि उनके व्यवस्थित पुनर्वासन को सुनिश्चित किया है। वर्ष 1970 में तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित 63 हिंदू बंगाली परिवारों की दशकों की प्रतीक्षा आज समाप्त हो गई। उनके पुनर्वासन हेतु आज उन्हें कृषि भूमि व आवासीय पट्टा तथा मुख्यमंत्री आवास योजना के स्वीकृति–पत्र वितरित किए गए हैं।

उत्तर प्रदेश सरका द्वारा कानपुर देहात के रसूलाबाद में विस्थापित सभी 63 हिन्दू परिवारों के पुनर्वासन की व्यवस्था की गयी है। प्रत्येक परिवार को कृषि हेतु 02 एकड़ व आवास हेतु 200 वर्ग मीटर भूमि और मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत एक-एक आवास व शौचालय से आच्छादित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी अपने मंत्री मण्डल के सहयोगियों के साथ जब पुनर्वास प्रमाण पत्र दिया गया तो सबने इसे मानवता की भारत की अभूतपूर्व सेवा का उदाहरण बताया।

उत्तर प्रदेश सरका द्वारा कानपुर देहात के रसूलाबाद में विस्थापित सभी 63 हिंदू परिवारों के पुनर्वासन की व्यवस्था की गई है।

प्रत्येक परिवार को कृषि हेतु 02 एकड़ व आवास हेतु 200 वर्ग मीटर भूमि और मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत एक–एक आवास व शौचालय से आच्छादित किया जा रहा है। आजादी के समय पुर्नवास व्यवस्था पर महात्मा गांधी ने कहा था कि पाकिस्तान से प्रताड़ित होकर आनेवाले अल्पसंख्यकों को भारत में नौकरी सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराना चाहिए। जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा था कि प्रधानमंत्री आकस्मिक निधि का उपयोग पाक से आनेवाले अल्पसंख्यकों के लिए किया जाना चाहिए। कांग्रेस के दो पूर्व अध्यक्ष पट्टाभि सीतारमैया, जे॰ बी॰ कृपलानी ने भी इस तरह की बात कही थी। इंदिरा गांधी ने कहा था कि पूर्वोत्तर के राज्यों में भ्रमण कर बांग्लादेश व पाक से आये अल्पसंख्यकों के दुख को साझा करना चाहती हूँ।

सन 2003 में मनमोहन सिंह ने विपक्ष के नेता के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार से मांग की थी कि बांग्लादेश जैसे देशों से प्रताड़ित होकर आ रहे अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने में हमें ज्यादा उदार होना चाहिए। उन्होंने भाषण में कहा था, मैं उम्मीद करता हूं कि माननीय उप प्रधानमंत्री इस संबंध में नागरिकता कानून को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करते समय ध्यान देंगे। जब 2003 में भाषण दे रहे थे तब उच्च सदन में आसन पर उपसभापति नजमा हेपतुल्ला बैठी थीं। हेपतुल्ला को यह कहते सुना गया कि पाकिस्तान में भी अल्पसंख्यक परेशान हैं और उनका भी ध्यान रखा जाए। तब तत्कालीन उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा था कि विपक्ष के नेता ने जो कहा, उसका वह पूरा समर्थन करते हैं। उ0प्र0 के अनेक जिलों में बांग्ला देश, पाकिस्तान से आये शरणार्थी रहते हैं। जिन्हें पहले कई प्रकार की सुविधाएं नहीं मिलती थीं। लेकिन देश में सबसे पहले उ0प्र0 सरकार ने मानवता के इस महायज्ञ को प्रारम्भ करते हुए पड़ोसी देशों से आये शरणार्थियों के पुर्नवास व्यवस्था की पहल की है।

राजनीति में आचरण की शुचिता हमारी शपथ!

दूसरी बार सत्ता में आयी योगी सरकार अनुभव, परिपक्वता, प्रमाणिकता से जनसेवा करने के लिए कटिबद्ध दिख रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने मंत्री परिषद की बैठक में भाजपा की शुचिता की राजनीति को आगे बढ़ाते हुए कहा कि स्वस्थ लोकतंत्र के लिए जन प्रतिनिधियों के आचरण की शुचिता अति आवश्यक है। इसी भावना के अनुरूप सभी माननीय मंत्रीगण शपथ लेने के अगले तीन माह की अवधि के भीतर अपने और अपने परिवार के सदस्यों की समस्त चल–अचल संपत्ति की सार्वजनिक घोषणा करें। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के प्रावधानों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित करते हुए मंत्रीगणों के लिए निर्धारित आचरण संहिता का पूरी निष्ठा से पालन किया जाए।

सभी माननीय मंत्रीगण शपथ लेने के अगले तीन माह की अवधि के भीतर अपने और अपने परिवार के सदस्यों की समस्त चल-अचल संपत्ति की सार्वजनिक घोषणा करें।

सभी लोक सेवक (आईएएस/पीसीएस को अपनी व परिवार के सदस्यों की समस्त चल/अचल संपत्ति की सार्वजनिक घोषणा करे। यह विवरण आमजनता के अवलोकनार्थ ऑनलाइन पोर्टल पर उपलब्ध कराया जाए।

सभी मंत्रीगण यह सुनिश्चित करें कि शासकीय कार्यों में उनके पारिवारिक सदस्यों का कोई हस्तक्षेप नहीं हो। हमें अपने आचरण से आदर्श प्रस्तुत करना होगा।

मंत्रिपरिषद के समक्ष सभी विभागों के सांगठनिक व्यवस्था से अवगत होते हुए विगत 05 वर्ष में विभाग की उपलब्धियों के परिचय के साथ आगामी 100 दिन, 06 माह, 01 वर्ष, 02 वर्ष और 05 वर्ष की कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण संपन्न हो चुका है। अब इस कार्ययोजना को यथार्थ रूप देने का समय है।

सभी माननीय मंत्रीगण विभागीय अधिकारियों का मार्गदर्शन करें। परियोजनाओं में गुणवत्ता और समयबद्धता को सुनिश्चित कराएं। आदरणीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में हम सभी को अंत्योदय के संकल्प को पूरा करने के लिए प्राण–प्रण से जुटना होगा।

मंत्रिपरिषद के प्रदेश भ्रमण का कार्य पूरा कर लेना होगा। इस संबंध में 18 मंत्री समूह गठित किए गए हैं। उपमुख्यमंत्री गणों की टीम में एक–एक राज्य मंत्री सम्मिलित हैं, शेष तीन सदस्यीय मंत्री समूह गठित किए गए हैं। यह 18 समूह 18 मंडलों का भ्रमण करेगी। भ्रमण का यह कार्यक्रम शुक्रवार से रविवार तक होगा। पहले चरण में प्रदेश भ्रमण करने के बाद मंत्री समूहों का रोटेशन प्रणाली के तहत दूसरे मंडलों की जिम्मेदारी दी जाएगी।

तीन दिवसीय मंडलीय भ्रमण के दौरान हर टीम को एक जनपद में कम से कम 24 घंटे रहना होगा। टीम का नेतृत्व कर रहे वरिष्ठ मंत्री कम से कम दो जिलों का भ्रमण करें। शेष मंत्री गणों को सुविधानुसार एक–एक जिले की जिम्मेदारी दी जाए।

मंत्री समूह मंडलीय भ्रमण के दौरान एक मंडलीय समीक्षा बैठक करेगा। जनपदों को वर्चुअली जोड़ा जा सकता है। इसमें स्थानीय जनप्रतिनिधियों की सहभागिता जरूर हो।

भ्रमण कार्यक्रम के दौरान पूर्व जनप्रतिनिधियों /संगठन/विचार परिवार के सदस्यों के साथ भी बैठक करें। उनकी अपेक्षाओं, समस्याओं और सुझावों को सुनें। निदान का प्रयास करें। मंडलीय समीक्षा बैठकों में विभागीय प्रस्तुतिकरण देखें।

भ्रमण के दौरान जन चौपाल का कार्यक्रम अवश्य करें। सीधा जनता से संवाद करें। किसी एक विकास खंड/तहसील के औचक निरीक्षण करे। दलित/मलिन बस्ती में सहभोज का कार्यक्रम रखें। विकास कार्यों का स्थलीय निरीक्षण करें। गुणवत्ता की परख करें। शासन की लोक कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों से भेंट करें। कानून व्यवस्था की समीक्षा करते हुए महिला सुरक्षा के मामलों, एससी/एसटी के प्रकरणों में अभियोजन की स्थिति, पुलिस पेट्रोलिंग, बाल यौन अपराधों, व्यापरियों की समस्याओं, गैंगस्टर पर कार्रवाई आदि का पूरा विवरण देखें। मंत्री समूहों के हर सदस्य को रात्रि विश्राम किसी जिले में ही करना होगा। रात्रि विश्राम सरकारी अतिथि गृह में ही करना सुनिश्चित करें।

हर टीम अपनी भ्रमण रिपोर्ट मुख्यमंत्री कार्यालय के समक्ष प्रस्तुत करेगी। मंत्रिपरिषद की बैठक में मंत्री समूह की आकलन रिपोर्ट पर चर्चा होगी। तदनुसार जनहित में और कदम उठाए जाएंगे।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में विगत 05 वर्ष में टीम यूपी ने जन अपेक्षाओं के अनुरूप विकास और सुशासन का मॉडल प्रस्तुत किया है। अब हमारी प्रतिस्पर्धा हमसे ही है। हमें जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप आचरण करते हुए प्रदेश के समग्र विकास के लिए कार्य करना होगा।

राज्यमंत्री गणों को कार्य आवंटन पूर्ण हो गया है। यह सुनिश्चित किया जाए कि विभागीय बैठकों में राज्यमंत्री गणों को जरूर सम्मिलित हों।

दूसरे राज्यों/राष्ट्रों के दौरे पर जाने वाले मंत्रीगण/अधिकारीगण वापस लौटने के उपरांत अपने अनुभवों/नई जानकारियों के बारे में मंत्रिपरिषद के समक्ष अपनी प्रस्तुति देगा।

सभी मंत्रीगणों को सोमवार व मंगलवार को अनिवार्य रूप से राजधानी में रहना होगा। शुक्रवार से रविवार तक अपने निर्वाचन क्षेत्र/प्रभार के जिलों में जनता के बीच रहने का कार्यक्रम बनाएं।

प्रदेश भ्रमण के लिए गठित मंत्री समूहों के अध्यक्ष

1. उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्या– आगरा मंडल
2. उपमुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक – वाराणसी मंडल
3. श्री सूर्य प्रताप शाही – मेरठ मंडल
4. श्री सुरेश खन्ना – लखनऊ मंडल
5. श्री स्वतंत्र देव सिंह –मुरादाबाद मंडल
6. श्री बेबी रानी मौर्या – झांसी मंडल
7. चौधरी लक्ष्मी नारायण – अलीगढ़ मंडल
8. श्री जयवीर सिंह– चित्रकूट धाम मंडल
9. श्री धर्मपाल सिंह – गोरखपुर मंडल
10. श्री नंदगोपाल गुप्ता 'नंदी'– बरेली
11. श्री भूपेंद्र सिंह– मिर्जापुर मंडल
12. श्री अनिल राजभर – प्रयागराज मंडल
13. श्री जितिन प्रसाद– कानपुर मंडल
14. श्री राकेश सचान – देवीपाटन मंडल
15. श्री अरविंद शर्मा– अयोध्या मंडल
16. श्री योगेंद्र उपाध्याय– सहारनपुर मंडल
17. श्री आशीष पटेल– बस्ती मंडल
18. श्री संजय निषाद – आजमगढ़ मंडल

बाबा साहब के संकल्पों को भाजपा पूर्ण कर रही

भारतीय जनता पार्टी ने भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती को समरसता दिवस के रूप में मनाया। प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ जी, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह ने अटल चौक पर बाबा साहेब की प्रतिमा पर पुश्पार्चन करके कृतज्ञ श्रद्धांजली अर्पित की एवं विश्वैश्वरैय्या प्रेक्षागृह में बाबा साहेब के जीवन दर्शन को सामाजिक समरसता संगोष्ठी के माध्यम से व्यक्त किया। प्रदेश महामंत्री संगठन श्री सुनील बंसल ने पार्टी के राज्य मुख्यालय में संविधान निर्माता बाबा साहेब के चित्र पर पुष्पार्चन किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह ने विश्वैश्वरैय्या प्रेक्षागृह में आयोजित सामाजिक समरसता संगोष्ठी में कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने संविधान निर्माण के साथ राष्ट्र निर्माण का कार्य भी किया हैं। डा. अम्बेडकर ने समानता, समरसता के साथ ही वंचित व शोषित वर्ग को विकास की मुख्यधारा से जोड़कर जन–जन को आत्मनिर्भर बनाकर आत्मनिर्भर राष्ट्र निर्माण को स्वप्न देखा और विश्व के सबसे बड़े संविधान के निर्माण में डॉ. अम्बेडकर ने इसकी व्यवस्था भी की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी बाबा साहेब के स्वप्न को साकार और संकल्प को पूर्ण करने के लिए अहर्निष कार्य कर रहे हैं। श्री सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बाबा साहेब से जुड़े पांच स्थानों को पंचतीर्थ के रूप में विकसित किया ताकि नई पीढ़ी बाबा साहेब के विचारो और उनके जीवन से प्रेरणा ले सकें। इसके साथ ही मोदी जी ने 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाने की परम्परा प्रारम्भ कर डॉ. अम्बेडकर को सच्चे अर्थो में श्रद्धांजली अर्पित की। वहीं संयुक्त राष्ट्र संघ के पटल पर डॉ. अम्बेडकर की जयंती मनाए जाने का प्रस्ताव भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा प्रस्तुत किया गया। श्री सिंह ने कहा भाजपा की सरकार बाबा साहेब के स्वप्न के भारत निर्माण के लिए सतत् कार्य कर रही है।

प्रदेश उपाध्यक्ष श्री विजय बहादुर पाठक ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश के सभी जनपदों में सामाजिक समरसता संगोष्ठियों में प्रबुद्ध जन तथा आमजन के बीच उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य बरेली, श्री बृजेश पाठक कानपुर, पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अरूण सिंह गाजियाबाद, केन्द्रीय मंत्री श्री महेन्द्र नाथ पाण्डेय गौतमबुद्धनगर, केन्द्रीय मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी वाराणसी सहित पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारी, केन्द्र सरकार के मंत्री, प्रदेश पदाधिकारी,

प्रदेश सरकार के मंत्री, सांसद तथा क्षेत्रीय अध्यक्षों ने राष्ट्र नवनिर्माण में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के योगदान पर चर्चा करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए। इसके साथ ही कार्यकर्ताओं ने अपने घरो पर बाबा साहेब के चित्र पर पुष्पार्चन किया। श्री पाठक बताया कि डॉ. अम्बेडकर जयंती पर मैधावी छात्रों का सम्मानित भी किया गया तथा मंडल स्तर पर स्वच्छता अभियान भी चलाया गया। इसके साथ ही विभिन्न स्थानों पर स्वास्थ्य शिविर भी संचालित किए गए।

अनुसूचित मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष रामचन्द्र कनौजिया के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री असीम अरुण विजय लक्ष्मी गौतम एवं अनूप बाल्मीकि ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पुश्प अर्पित किये तथा इस शुभ अवसर पर बाबा साहेब के संदेश पर कार्य करने का संकल्प लिया तथा बाबा साहब के संदेशों को साकार कर रहे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्ग दर्शन में उनके संदेशों को जन–जन तक ले जाने का प्रण लिया। भारत रत्न बाबा साहेब की 131 वीं जयंती की शुभकामनाएं दी अटल चौक पर भाजपा अनुसूचित मोर्चा उत्तर प्रदेश द्वारा बाबा साहब के जीवन से संबंधित सामाजिक भजन गीत का आयोजन किया गया रामचंद्र कनौजिया ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बाबा साहब भारतीय संविधान के निर्माता, आधुनिक भारत के शिल्पकार एवं सामाजिक समानता और न्याय के प्रणेता थे, उन्होंने करोड़ों शोषित, वंचितों, दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों को सम्मानीय जीवन देने के लिए जीवन भर संघर्ष किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्व की एवं उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार द्वारा जनहित योजनाओं के अंतर्गत सर्वाधिक लाभ पहुंचाया जा रहा है अनुसूचित जाति वर्ग का सर्वाधिक सम्मान भारतीय जनता पार्टी में ही निहित है।

कार्यक्रम में रमेश तूफानी उत्तर प्रदेश एससी एसटी आयोग सदस्य, अजय सिंह कोरी प्रदेश महामंत्री अनुसूचित जाति, राजकिशोर रावत प्रदेश मीडिया प्रभारी, दुर्गेश बाल्मीकि प्रदेश कार्यालय प्रभारी, क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी अवध क्षेत्र प्रियंक आर्य, क्षेत्र कार्यालय प्रभारी राहुल सोनकर, श्रीमती अनीता रावत पासी प्रदेश कार्यसमिति सदस्य दीपक गौतम कन्नौजिया, राहुल पाण्डेय युवा मोर्चा कार्यकर्ता मुख्यरूप से उपस्थित रहे।

शहीदों का सपना "आत्मनिर्भर भारत" : तेजस्वी

भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या ने आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर अयोजित अमृत महोत्सव के तहत आज काकोरी शहीद स्मारक पहुंचकर शहीदो को नमन किया।

भाजपा युवा मोर्चा द्वारा अयोजित शहीदो को नमन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री सूर्या ने कहा कि भारत मां के सपूतों ने राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर दिया, ऐसे वीर सपूतों के बलिदान को प्रणाम। उन्होंने कहा कि 20 से 30 वर्ष के आयु में पं. राम प्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खान, ठाकुर रोशन सिंह जैसे नौजवानों ने देश की आजादी का स्वप्न देखा और उस स्वप्न को साकार करने के लिए सरफरोशी की तमन्ना दिल में लेकर अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया।

श्री सूर्या ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी के आत्म निर्भर भारत के मंत्र जन–जन तक पहुंचाना है। देश आत्मनिर्भर बनेगा जब हर युवा आत्म सम्मान के साथ खड़े होगें। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अमृत महोत्सव के माध्यम से युवाओं को राष्ट्र भक्तों, शहीदों, महापुरूषों के जीवन चरित्र से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। ताकि प्रत्येक युवा आजादी के महानायकों से जुड़े और आजादी का मूल्य समझ सकें।

उन्होंने कहा कि युवाओं में राष्ट्र, समाज व प्रत्येक व्यक्ति के प्रति जिम्मेदारियों के भाव के साथ युवा मोर्चा को बढ़ाना, युवा मोर्चा को मजबूत करना, उत्तर प्रदेश को मजबूत करना और भारत को मजबूत करने का काम हम सभी को करना है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनाने में मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रांशु दत्त द्विवेदी के साथ उनकी पूरी टीम ने अथक परिश्रम किया है। जिससे पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय पथ पर चलती प्रदेश की भाजपा सरकार पुनः गांव, गरीब, किसान, शोषित, वंचित वर्ग की खुशहाली के लिए काम कर रही हैं।

युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रांशु दत्त द्विवेदी ने कहा कि सरकार द्वारा आने वाले 5 साल में गरीब, दलित, किसान, नौजवान, विद्यार्थी आदि के लिए किए जाने वाले सेवा कार्यों को जरूरतमंदो तक पहुंचाने का दायित्व हम सब के ऊपर है। हम सभी लोग आने वाले 5 साल तक सरकार के कामों को कैसे अंतिम व्यक्ति पहुंचा सकते हैं इसके बारे में कार्ययोजना के अनुरूप बूथ स्तर तक काम करना है।

तत्पश्चात भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर सभी उत्तर प्रदेश के पदाधिकारी व सभी जिला अध्यक्ष और क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष, महामंत्री के साथ युवा मोर्चा के किए गए कार्यक्रमों की चर्चा किया। बैठक में उपस्थित भाजयुमो के राष्ट्रीय महामंत्री, सांसद, उत्तरप्रदेश प्रभारी राजू बिष्ट जी, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य व सहप्रभारी बबीता फोगाट, भक्ति शर्मा, विवेकानन्द, युवा मार्चा राष्ट्रीय महामंत्री वैभव सिंह, मंच का संचालन हर्षवर्धन सिंह ने किया और प्रदेश के महामंत्री वरूण गोयल युवा मोर्चा के किए गए कार्यक्रमों के बारे में चर्चा की तथा देवेन्द्र पटेल ने आगामी कार्यक्रम माइक्रोडोनेशन के बारे में बताया।

अमृत सरोवर गाँवों के लिए वरदान

राज्यमंत्री, ग्रामीण विकास, उपभोक्ता खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय भारत सरकार, साध्वी निरंजन ज्योति ने कहा कि मा० प्रधानमंत्री जी के विजन और लक्ष्य के अनुरूप ग्रामीण विकास मंत्रालय, 5 अन्य मंत्रालयों तथा राज्य सरकारों के सहयोग से देश में 50,000 से अधिक अमृत सरोवरों का निर्माण कराया जाएगा, इस योजना के दूरगामी परिणाम हासिल होंगे। साध्वी निरंजन ज्योति आज योजना भवन लखनऊ में उत्तर प्रदेश के जिला अधिकारियों व मुख्य विकास अधिकारियों के साथ इस संबंध में आयोजित वर्चुअल बैठक की अध्यक्षता कर रही थीं। उन्होंने कहा कि जिलाधिकारी, ब्लॉक वाइज व जिले पर इस संबंध में बैठक बुलाएं तथा ब्लॉक वाइज प्रधानों की भी बैठक की जाए और इस योजना को मूर्तरूप दिया जाए, इसमें अधिक से अधिक जनसहभागिता सुनिश्चित किया जाए और पूरी टीम भावना से काम किया जाए। यह अमृत सरोवर तालाब ही नहीं, बल्कि गांव के लिए पानी उपलब्ध कराने तथा पानी की रिचार्जिंग के लिए वरदान साबित हों, ऐसे ठोस व प्रभावी प्रयास इस हेतु किए जाय। कहा कि इनको एक दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया जाए, इनके निर्माण में जो मानक और गाइडलाइंस निर्धारित की गई हैं, उनका भी पालन सुनिश्चित किया जाए। इन तालाबों में गांव के सीवरेज का पानी कतई नहीं जाएगा। कहा कि इनका नामकरण शहीदों के नाम से किया जाएगा तथा यहां पर 15 अगस्त को एक उत्सव जैसे माहौल में झंडारोहण की व्यवस्था की जाएगी। यह आदर्श तालाब के रूप में विकसित होंगे तथा आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरक भी साबित होंगे। कहा कि सभी जिला अधिकारी इस योजना को मूर्त रूप देने में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वहन करें और संबंधित वेबसाइट और ऐप से भी इनकी कार्ययोजना की विधिवत जानकारी हासिल कर ले।

उत्तर प्रदेश के 80 लोकसभा क्षेत्रा में 5 हजार से अधिक अमृत सरोवर बनाए जाएंगे

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि अमृत सरोवर गांवों के लिए वरदान साबित होंगे। अमृत सरोवर बनाना सरकार का एक क्रांतिकारी कदम है। यह पर्यटन के रूप में भी विकसित होंगे। अमृत सरोवर जल संरक्षण के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होंगे, अमृत सरोवर उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा क्षेत्र में बनाए जाएंगे और प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र 75 अमृत सरोवरों का निर्माण होगा। कहा कि इनके निर्माण में जनसहभागिता होना बहुत जरूरी है। स्वाधीनता सेनानियों या उनके पारिवारिक सदस्यों या पद्म पुरस्कार से सम्मानित लोगों द्वारा इनकी शुरुआत जाएगी। यह अमृत सरोवर स्विमिंग पूल और पर्यटन के रूप में एक मॉडल बनेंगे। कहा कि इनकी देखभाल के लिए अमृत सखी के रूप में महिला एक महिला को नियुक्त किए जाने का उनका प्रयास रहेगा। अमृत सरोवर के पास चबूतरा, सामुदायिक भवन, वृक्षारोपण, सामुदायिक शौचालय आदि की भी व्यवस्था नियमानुसार किए जाने के निर्देश उप मुख्यमंत्री ने दिये। कहा कि प्रदेश के 80

लोकसभा क्षेत्रों में लगभग 5600 तालाब अमृत सरोवरो का निर्माण किया जाएगा। कहा सभी सम्बंधित अधिकारी इस चुनौती को स्वीकार करते हुए पूरी क्षमता के साथ ऐसा करके दिखाएं कि उत्तर प्रदेश का नाम देश में इस मामले में सर्वोपरि रहे। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय महत्व की इस योजना को पूरी गतिशीलता के साथ संचालित किया जाना है और 15 अगस्त 2022 तक इसमें काफी अधिक मात्रा में काम पूरा करने के प्रयास किए जाएं। श्री मौर्य ने कहा कि इसकी डीपीआर बनाने में कोई कोताही न बरती जाए। इन सरोवरों को एक स्विमिंग पूल की तरह, इस तरह से विकसित किया जाए कि इसमें लोग तैराकी कर आगे के लिए भी बढ़ सकें। कहा कि इनके निर्माण में जन सहभागिता सुनिश्चित की जाए और जन आंदोलन के रूप में इस कार्य को किया जाए। उन्होंने कहा कि सरोवरों की देखभाल के लिए अमृत सखी के रूप में एक महिला की तैनाती करने का भी प्रयास किया जाए ताकि उसे रोजगार भी मिल सके और देखभाल भी हो सके। उन्होंने कहा विकास कार्यों को तीव्र गति से किया जाए। यह अमृत सरोवर ऐसे बनाए जाने कि बहुउपयोगी सिद्ध हों। यहां पर बड़ा चबूतरा बनाया जाये, बड़ा बोर्ड लगाया जाए यहां पर सामुदायिक भवन व शौचालय बनाने के प्रयास किए जाएं ताकि गांव में बारात को ठहराने आदि के लिए भी उपयोगी सिद्ध हों। उन्होंने आशा व्यक्त की कि अधिकारी पूरी तत्परता से काम करते हुए इसे समय से पूरा करेंगे। कहा कि इन सरोवरों के पास पीपल, नीम, बरगद, जामुन आदि के पेड़ लगाए जाएं। इन तालाबों से जो मिट्टी निकलेगी, उसका उपयोग ग्राम पंचायत कर सकेगी। सबसे पहले इसकी कार्य योजना ग्राम स्तर से तैयार होगी। इसकी हर स्तर पर गहन मानिटरिंग की जाए तथा काम शुरू होने, काम के दौरान व काम की समाप्ति की सभी फोटोग्राफ्स, वहां पर डिस्प्ले किए जाएंगे। अधिकारी वर्क साइट पर हर हाल में जाएंगे। पीने के पानी के साथ—साथ वाटर रिचार्जिंग के लिए इन सरोवरों को उपयोगी बनाया जाए। कहा कि अमृत सरोवरो के डॉक्यूमेंटेशन का कार्य बहुत ही अच्छी तरीके से किया जाए। इसका डॉक्यूमेंटेशन राष्ट्र, राज्य और जिला स्तर के साथ—साथ ब्लॉक स्तर पर भी करने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। अमृत सरोवरों के साइट सेलेक्शन में दिशा निर्देशों और व्यवहारिक पहलुओं का पूरा ध्यान रखा जाए।

श्री मौर्य ने कहा कि इन सरोवरों तक लोगों के जाने के लिए लिंक मार्ग की व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इनके निर्माण में एक—एक पैसे का सदुपयोग होना चाहिए। उन्होंने कहा कि इनके निर्माण के लिए लक्ष्य लेकर चलें कि 15 अगस्त 2022 को यहां पर ध्वजारोहण हो। वैसे तो इस योजना को 15 अगस्त 2023 तक हर हाल में पूरा करना है, लेकिन 15 अगस्त 2022 तक इसमें अधिक से अधिक काम करने का प्रयास किया जाए। यहां पर सुंदरीकरण के लिए भी निधियों की व्यवस्था करने का भी संपूर्ण प्रयास किया जाए। यह एक पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित हों। परियोजना बनाते समय गांव की व्यवहारिक समस्याओं को भी देखना है। कहा कि प्रधानमंत्री जी के संकल्प के अनुरूप इनको स्वरूप देना है। अमृत सरोवर मिशन के तहत तालाबों का आकार 1 एकड़ होगा। मनरेगा, पंचायती राज, नमामि गंगे, राजस्व, लघु सिंचाई, वन पर्यावरण, कल्चरल डिपार्टमेंट आदि की भी अमृत सरोवरो को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। एक तालाब में 10000 क्यूबिक मीटर जल धारण क्षमता होगी। साइट का सिलेक्शन कैसे होगा, इस बारे में निर्धारित दिशा निर्देशों व ग्राउंड रियलिटी देखकर चयन किया जाएगा। इस तालाबों की शुरुआत फ्रीडम फाइटर्स या उनके परिवार के सदस्यों अथवा पद्म पुरस्कार से सम्मानित लोगों के हाथों से की जाएगी। इनके बनाने में लोग श्रमदान भी कर सकते हैं। सरोवरों के निर्माण के बाद पंचायतों को सम्मानित भी किया जाएगा।

स्वाधीनता सेनानियों या उनके पारिवारिक सदस्यों, या पद्म पुरस्कार से सम्मानित लोगो द्वारा की जाएगी अमृत सरोवरो के निर्माण की शुरुआत अमृत सरोवर के पास चबूतरा, सामुदायिक भवन, वृक्षारोपण, सामुदायिक शौचालय आदि की भी करायी जायेगी व्यवस्था

अपर मुख्य सचिव ग्रामीण विकास, पंचायती राज एवं राजस्व श्री मनोज कुमार सिंह ने कहा कि अमृत सरोवरों के निर्माण के संबंध में स्टेट से जारी होने वाले दिशा निर्देशों को जल्दी ही जिलों को भेजा जा रहा है। उन्होंने कहा सभी दिशा निर्देशों और सम्बंधित वेबसाइट का अध्ययन सभी जिलाधिकारी व मुख्य विकास अधिकारी पूरी गंभीरता से कर लें। ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशक श्री धर्मवीर झां ने अमृत सरोवरों के निर्माण के बारे में जारी दिशा—निर्देशों की बिंदुवार जानकारी दी।

इस अवसर पर राज्यमंत्री, ग्रामीण विकास व ग्रामीण अभियंत्रण, श्रीमती विजय लक्ष्मी गौतम, अपर मुख्य सचिव श्री मनोज कुमार सिंह, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण विकास संस्थान के महानिदेशक श्री एल0 वेंकटेश्वर लू, मिशन निदेशक, उत्तर प्रदेश ग्रामीण आजीविका मिशन श्री भानुचंद्र गोस्वामी, अपर आयुक्त मनरेगा श्री योगेश कुमार, संयुक्त आयुक्त ग्राम्य विकास श्री राजेश कुमार सहित ग्राम्य विकास विभाग के उच्च अधिकारी प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

योगी की विजन ने बदल दी यूपी की तस्वीर

योगी के नेतृत्व में ''सर्वोत्तम प्रदेश'' बनेगा उत्तर प्रदेश

मीना चौबे

देश के सबसे बड़े सूबे में जब मा योगी आदित्यनाथ जी ने पहली बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। तभी उन्होंने संकल्प लिया था कि उत्तर प्रदेश को सर्वोत्तम प्रदेश बनाना है। तब से लगातार भय, भूख और भ्रष्टाचार के खिलाफ योगी जी ने बड़े फैसले लिए। जिसका नतीजा ये हुआ कि दूसरी बार भी सूबे की जनता जनार्दन ने योगी आदित्यनाथ जी को उत्तर प्रदेश का सीएम चुना। सूबे के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को राज्य की कमान संभाले एक महीना पूरा हो गया है। इस एक महीने में मुख्यमंत्री योगी जी ने अपने कई कामों से खासकर विपक्ष को खामोश होने पर मजबूर कर दिया है। बीते तीस दिनों में योगी सरकार ने कई ऐसे बड़े फैसले लिए, जो एक सीएम और नेता के तौर पर उनकी अलग पहचान बनाते हैं।

योगी सरकार 2.0 की पहली कैबिनेट में बड़ा फैसला लिया गया। इस फैसले में मुफ्त राशन योजना को तीन महीने और बढ़ाया गया। जिससे 15 करोड़ लाभार्थियों को राशन आगे भी मिलता रहेगा।

योगी सरकार सभी तहसीलों में फायर टेंडर की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए तेजी से कार्य कर रही है। ग्रामीण क्षेत्र में अधिकतम 15 मिनट और शहरी क्षेत्र में अधिकतम 7 मिनट का रिस्पांस टाइम सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। योगी सरकार की पहल पर दो साल के अंदर 10 लाख करोड़ रुपए के निवेश के लक्ष्य के साथ ग्लोबल इन्वेस्टर समिट फिर होगी। 100 दिन में तीसरी ग्राउंड ब्रेंकिंग सेरेमनी। यूपी सरकार औद्योगिक निवेश को बढ़ावा देने के लिए बड़ी छलांग लगाने की तैयारी में है।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी की सरकार ने भ्रष्टाचार, लापरवाही और जनता से जुड़ी समस्याओं में अनदेखी करने के मामले में डीएम सोनभद्र और एसएसपी गाजियाबाद को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया।

मुख्यमंत्री योगी जी के निर्देश पर पुलिस बल के लिए 86 राजपत्रित और 5295 अराजपत्रित नए पदों को शासन की मंजूरी मिली। पिछले 20 दिनों में 200 करोड़ से ज्यादा की अवैध संपत्तियों का ध्वस्तीकरण किया गया। इस कार्रवाई में 25 माफिया डीजीपी ऑफिस और 8 शासन की तरफ से चिन्हित किए गए थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने नवरात्रि पर्व के पहले दिन से महिला सुरक्षा को लेकर पुलिस विभाग को विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए। एंटी रोमियो स्क्वॉड दोबारा शुरु किया गया। सीएम आवास पर जनता दर्शन की पुनः शुरुआत की। हर दिन सरकार के एक मंत्री की मौजूदगी में जन समस्याओं के निस्तारण के निर्देश दिए गए। सीएम योगी आदित्यनाथ ने मिर्जापुर, वाराणसी और गोरखपुर में दौरा कर विभिन्न योजनाओं से जुड़ी समीक्षा बैठके की। योगी सरकार ने श्रावस्ती जनपद से स्कूल चलो अभियान की शुरुआत की, कम साक्षरता वाले जिलों पर विशेष फोकस किया। लापरवाही और भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति को आगे बढ़ाते हुए डीएम औरैया सुनील वर्मा को सस्पेंड किया गया। पेपर लीक होने के आरोप में बलिया के क्ष्वै को सस्पेंड और अरेस्ट किया गया। पिछले 20 दिनों में 100 से ज्यादा अपराधियों और माफियाओं के खिलाफ बुलडोजर चला। मुख्यमंत्री योगी जी के सभी मंत्रियों ने अपने–अपने विभागों की 100 दिन की कार्ययोजना तैयार कर कार्य करने को निकल पड़े। योगी सरकार ने युवाओं को हाथों में 9.74 लाख टैबलेट और स्मार्टफोन देने की कार्रवाई शुरु की। योगी सरकार ने जिस तरह को प्रदेश में संचारी रोग नियंत्रण अभियान की शुरुआत की वह एक संचारी रोग नियंत्रण के तरफ बढ़ती

हुई दिखने लगी ।योगी सरकार में अब यूपी में होमगार्ड के 20 प्रतिशत पदों पर महिलाओं की भर्ती होगी, इसकी प्रक्रिया 100 दिन में शुरु होगी।

सीएम ने एक महीने में अगले 3 महीने, 6 महीने और 5 साल का खाका तैयार कराया। भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाते हुए कई आईएएस अधिकारियों के तबादले तो कई अधिकारियों को वेटिंग लिस्ट में डाला। अपने क्षेत्र में नागरिकों की समस्या के तुरंत निस्तारण के लिए रात में अपनी तैनाती स्थल पर एसडीएम, सीओ और तहसीलदार को सीएम ने दिए निर्देश। सीएम योगी ने यूपी में महिला होमगार्ड्स को एंटी टेररिस्ट मॉड्यूल का प्रशिक्षण देने के निर्देश दिए। सीएम ने सरकारी कर्मचारियों के लंच का समय निर्धारित किया, दोपहर एक बजे से 1.30 बजे तक लंच टाइम तय किया। अप सरकार ने पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित 63 हिंदू बंगाली परिवारों के पुर्नावास के लिए भूमि के पट्टे का स्वीकृति पत्र दिया। सीएम ने अगले 6 महीने में 2.51 लाख आवास बनाने का लक्ष्य लेकर तेजी से कार्य करने के निर्देश दिए। भ्रष्टाचार, लापरवाही और जनता से जुड़ी समस्याओं में अनदेखी करने के मामले में असिस्टेंट कमिश्नर (प्रभारी) वाणिज्य कर सचल दल, इकाई बस्ती आशुतोष मिश्रा को सस्पेंड किया। बिना मानचित्र स्वीकृति के इमारत निर्मित किए जाने के मामले में अवर अभियंता, गाजियाबाद विकास प्राधिकरण शिव ओम को सस्पेंड किया। सीएम ने यूपी पुलिस आधुनिकिकरण एवं सुदृढ़ीकरण आयोग का कार्यकाल 30 जून 2022 तक बढ़ाए जाने की स्वीकृति प्रदान की। भ्रष्टाचार, लापरवाही और जनता से जुड़ी समस्याओं में अनदेखी करने के मामले में असिस्टेंट कमिश्नर(प्रभारी) वाणिज्य कर सचल दल, इकाई बाराबंकी को सस्पेंड किया। सीतापुर में आमजन की सुविधा के लिए नई पुलिस चौकी गनेशपुर स्थापित करने का फैसला किया। गुंडों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का निर्देश देते हुए राज्य में कानून व्यवस्था को प्राथमिकता दी जाने लगी। योगी सरकार आयुषमान भारत योजना से महिला और पुरुष होमगार्ड जवानों का स्वास्थ्य बीमा कराएगी।

सीएम योगी ने भ्रष्टाचार के आरोप में झांसी प्रखंड बेतवा नहर झांसी (संप्रित निलंबित) अधिशासी अभियंता को सेवा से हटाने का आदेश दिया। अधिकारी से 77 लाख 41 हजार की वसूली भी की जाएगी। उप निबंधक कार्यालय (मैथा) कानपुर देहात के लिए पद सृजन की स्वीकृति दी। सीएम योगी के निर्देश पर अयोध्या में नियमित रामलीला का आयोजन किया जाएगा। हस्तिनापुर, मेरठ और गोरखपुर में प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय की स्थापना करने का निर्देश दिया गया। वाराणसी में संत रविदास संग्रहालय व सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना करने के भी निर्देश दिए।

यही नहीं सीएम का सख्त निर्देश है कि सभी कैबिनेट मंत्री अब फील्ड में जाएंगे। कैबिनेट मंत्रियों की अध्यक्षता में 18 मंडलों के लिए कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है। यह टीमें हर मंडल में 72 घंटे का प्रवास करेंगी।

पिछली सरकारों में ब्राह्मणों की अनदेखी होने पर सीएम ने यूपी में पुरोहित कल्याण बोर्ड का गठन करने को लेकर मंजूरी दी। इसके तहत गरीब ब्राह्मणों को रोजी रोटी के लिए दर बदर भटकना नहीं पड़ेगा। प्रदेश में आने वाले पांच सालों में मेडिकल प्रोफेशनल सीटें दोगुनी होंगी। जिसमें पांच सालों में एमबीबीएस की 7000, पीजी की 3000, नर्सिंग की 14,500 और पैरामेडिकल की 3,600 सीटों को बढ़ाया जाएगा। और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं के 20,000 पदों पर नियुक्ति प्रक्रिया अगले छह माह में पूर्ण कराने के निर्देश दिए गए सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों और स्वास्थ्य सखियों को आयुष्मान भारत योजना का लाभ दिलाया जाएगा।जाहिर है जब सूबे के मुख्यमंत्री का विजन क्लियर रहेगा। उनके लिए गए हर फैसले पर अमल होगा तो प्रदेश का चहुंमुखी विकास होने में देर नहीं लगेगी। सूबे के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सिर्फ उत्तम प्रदेश ही नहीं बल्कि सर्वोत्तम प्रदेश बनकर रहेगा।

पी0एम0 म्यूजियम

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार।

नए विषयों के साथ, नए प्रेरक उदाहरणों के साथ, नए–नए संदेशों को समेटते हुए, एक बार फिर मैं आपसे 'मन की बात' करने आया हूँ। जानते हैं इस बार मुझे सबसे ज्यादा चिट्ठियाँ और संदेश किस विषय को लेकर मिली है? ये विषय ऐसा है जो इतिहास, वर्तमान और भविष्य तीनों से जुड़ा हुआ है। मैं बात कर रहा हूँ देश को मिले नए प्रधानमंत्री संग्रहालय की। इस 14 अप्रैल को बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्म जयन्ती पर प्रधानमंत्री संग्रहालय का लोकार्पण हुआ है। इसे, देश के नागरिकों के लिए खोल दिया गया है। एक श्रोता हैं श्रीमान सार्थक जी, सार्थक जी गुरुग्राम में रहते हैं और पहला मौका मिलते ही वो प्रधानमंत्री संग्रहालय देख आए हैं। सार्थक जी ने Namo App पर जो संदेश मुझे लिखा है, वो बहुत interesting है। उन्होंने लिखा है कि वो बरसों से न्यूज़ चैनल देखते हैं, अखबार पढ़ते हैं, सोशल मीडिया से भी connected हैं, इसलिए उन्हें लगता था कि उनकी general knowledge काफी अच्छी होगी, लेकिन, जब वे पी.एम. संग्रहालय गए तो उन्हें बहुत हैरानी हुई, उन्हें महसूस हुआ कि वे अपने देश और देश का नेतृत्व करने वालों के बारे में काफी कुछ जानते ही नहीं हैं। उन्होंने, पी.एम. संग्रहालय की कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में लिखा है, जो उनकी जिज्ञासा को और बढ़ाने वाली थी, जैसे, उन्होंने लाल बहादुर शास्त्री जी का वो चरखा देखकर बहुत खुशी हुई, जो, उन्हें ससुराल से उपहार में मिला था। उन्होंने शस्त्री जी की पासबुक भी देखी और यह भी देखा कि उनके पास कितनी कम बचत थी। सार्थक जी ने लिखा है कि उन्हें ये भी नहीं पता था कि मोरारजी भाई देसाई स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने से पहले गुजरात में Deputy Collector थे। प्रशासनिक सेवा में उनका एक लंबा career रहा था। सार्थक जी चौधरी चरण सिंह जी के विषय में वो लिखते हैं कि उन्हें पता ही नहीं था कि जमींदारी उन्मूलन के क्षेत्र में चौधरी चरण सिंह जी का बहुत बड़ा योगदान था। इनता ही नहीं वे आगे लिखते हैं जब Land reform के विषय में वहाँ मैंने देखा कि श्रीमान पी.वी. नरसिम्हा राव जी Land Reform के काम में बहुत गहरी रूचि लेते थे। सार्थक जी को भी इस Museum में आकर ही पता चला कि चंद्रशेखर जी ने 4 हज़ार किलोमीटर से अधिक पैदल चलकर ऐतिहासिक भारत यात्रा की थी। उन्होंने जब संग्रहालय में उन चीज़ों को देखा जो अटल जी उपयोग करते थे, उनके भाषणों को सुना, तो वो, गर्व से भर उठे थे। सार्थक जी ने ये भी बताया कि इस संग्रहालय में महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, डॉ० अम्बेडकर, जय प्रकाश नारायण और हमारे प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बारे में भी बहुत ही रोचक जानकारियाँ हैं।

साथियो, देश के प्रधानमंत्रियों के योगदान को याद करने के लिए आज़ादी के अमृत महोत्सव से अच्छा समय और क्या हो सकता है। देश के लिए यह गौरव की बात है कि आज़ादी का अमृत महोत्सव एक जन–आंदोलन का रूप ले रहा है। इतिहास को लेकर लोगों की दिलचस्पी काफी बढ़ रही है और ऐसे में पी.एम. म्यूजियम युवाओं के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन रहा है जो देश की अनमोल विरासत से उन्हें जोड़ रहा है।

वैसे साथियो, जब म्यूजियम के बारे में आपसे इतनी बातें हो रही हैं तो मेरा मन किया कि मैं भी आपसे कुछ सवाल करूं। देखते हैं आपकी जनरल नॉलेज (General knowledge) क्या कहती है। आपको कितनी जानकारी है। मेरे नौजवान साथियो आप तैयार हैं, कागज़ कलम हाथ में ले लिया? अभी मैं आपसे जो पूछने जा रहा हूँ, आप उनके उत्तर NaMo App या social media पर MuseumQuiz के साथ

share कर सकते हैं और जरुर करें। मेरा आपसे आग्रह है कि आप इन सभी सवालों का जवाब ज़रूर दें। इससे देश–भर के लोगों में म्यूजियम को लेकर दिलचस्पी और बढ़ेगी। क्या आप जानते हैं कि देश के किस शहर में एक प्रसिद्ध रेल म्यूजियम है, जहाँ पिछले 45 वर्षो से लोगो को भारतीय रेल की विरासत देखने का मौका मिल रहा है। मैं आपको एक और बसनम देता हूं। आप यहाँ Fairy Queen (फ़ेयरी क्वीन), Saloon of Prince of Wales (सलून ऑफ़ प्रिन्स ऑफ़ वेल्स) से लेकर Fireless Steam Locomotive (फ़ायरलेस स्टीम लोकोमोटिव) ये भी देख सकते हैं। क्या आप जानते हैं कि मुंबई में वो कौन सा म्यूजियम है, जहाँ हमें बहुत ही रोचक तरीके से Currency का Evolution देखने को मिलता है? यहाँ ईसा पूर्व छठी शताब्दी के सिक्के मौजूद हैं तो दूसरी तरफ E-Money भी मौजूद है। तीसरा सवाल 'विरासत–ए–खालसा' इस म्यूजियम से जुड़ा है। क्या आप जानते हैं, ये म्यूजियम, पंजाब के किस शहर में मौजूद है? पतंगबाजी में तो आप सबको बहुत आनंद आता ही होगा, अगला सवाल इसी से जुड़ा है। देश का एकमात्र Kite Museum कहाँ है? आइए मैं आपको एक बसनम देता हूं यहाँ जो सबसे बड़ी पतंग रखी है, उसका आकार 22 गुणा 16 फीट है। कुछ ध्यान आया – नहीं तो यहीं – एक और चीज़ बताता हूँ – यह जिस शहर में है, उसका बापू से विशेष नाता रहा है। बचपन में डाक टिकटों के संग्रह का शौक किसे नहीं होता! लेकिन, क्या आपको पता है कि भारत में डाक टिकट से जुड़ा नेशनल म्यूजियम कहाँ है? मैं आपसे एक और सवाल करता हूँ। गुलशन महल नाम की इमारत में कौन सा म्यूजियम है? आपके लिए बसनम ये है कि इस म्यूजियम में आप फिल्म के डायरेक्टर भी बन सकते हैं, कैमरा, एडिटिंग की बारीकियों को भी देख सकते हैं। अच्छा! क्या आप ऐसे किसी म्यूजियम के बारे में जानते हैं जो भारत की textile से जुड़ी विरासत को celebrate करता है। इस म्यूजियम में miniature paintings (मिनियेचर पेंटिंग्स), Jaina manuscripts (जैन मैनुस्क्रिप्ट्स), sculptures (स्कल्पचर) –बहुत कुछ है। ये अपने नदपुनम कपेचसंल के लिए भी जाना जाता है।

साथियो, technology के इस दौर में आपके लिए इनके उत्तर खोजना बहुत आसान है। ये प्रश्न मैंने इसलिए पूछे ताकि हमारी नई पीढ़ी में जिज्ञासा बढ़े, वो इनके बारे में और पढ़ें, इन्हें देखने जाएँ। अब तो, म्यूजियम्स के महत्व की वजह से, कई लोग, खुद आगे आकर, म्यूजियम्स के लिए काफ़ी दान भी कर रहे हैं। बहुत से लोग अपने पुराने collection को, ऐतिहासिक चीज़ों को भी, म्यूजियम्स को दान कर रहे हैं। आप जब ऐसा करते हैं तो एक तरह से आप एक सांस्कृतिक पूँजी को पूरे समाज के साथ साझा करते हैं। भारत में भी लोग अब इसके लिए आगे आ रहे हैं। मैं, ऐसे सभी निजी प्रयासों की भी सराहना करता हूँ। आज, बदलते हुए समय में और Covid Protocols की वजह से संग्रहालयों में नए तौर–तरीके अपनाने पर ज़ोर दिया जा रहा है। Museums में Digitisation पर भी Focus बढ़ा है। आप सब जानते हैं कि 18 मई को पूरी दुनिया में International Museum day मनाया जाएगा। इसे देखते हुए अपने युवा साथियों के लिए मेरे पास एक idea है। क्यों न आने वाली छुट्टियों में, आप, अपने दोस्तों की मंडली के साथ, किसी स्थानीय Museum को देखने जाएं। आप अपना अनुभव MuseumMemories के साथ ज़रूर साझा करें। आपके ऐसा करने से दूसरों के मन में भी संग्रहालयों के लेकर जिज्ञासा जगेगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, आप अपने जीवन में बहुत से संकल्प लेते होंगे, उन्हें पूरा करने के लिए परिश्रम भी करते होंगे। साथियो, लेकिन हाल ही में, मुझे ऐसे संकल्प के बारे में पता चला, जो वाकई बहुत अलग था, बहुत अनोखा था। इसलिए मैंने सोचा कि इसे 'मन की बात' के श्रोताओं को ज़रूर share करूं।

साथियो, क्या आप सोच सकते हैं कि कोई अपने घर से ये संकल्प लेकर निकले कि वो आज दिन भर, पूरा शहर घूमेगा और एक भी पैसे का लेन–देन बैं में नहीं करेगा, नकद में नहीं करेगा – है ना ये दिलचस्प संकल्प। दिल्ली की दो बेटियाँ, सागरिका और प्रेक्षा ने ऐसे ही Cashless Day Out का experiment किया। सागरिका और प्रेक्षा दिल्ली में जहाँ भी गईं, उन्हें digital payment की सुविधा उपलब्ध हो गयी। UPI QR code की वजह से उन्हें cash निकालने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। यहाँ तक कि street food और रेहड़ी–पटरी की दुकानों पर भी ज्यादातर जगह उन्हें online transaction की सुविधा मिली।

साथियो, कोई सोच सकता है कि दिल्ली है, मेट्रो सिटी है, वहां ये सब होना आसान है। लेकिन अब ऐसा नहीं है कि UPI का ये प्रसार केवल दिल्ली जैसे बड़े शहरों तक ही सीमित है। एक उमेंहम मुझे गाजियाबाद से आनंदिता त्रिपाठी का भी मिला है। आनंदिता पिछले सप्ताह अपने पति के साथ North East घूमने गई थीं। उन्होंने असम से लेकर मेघालय और अरुणाचल प्रदेश के तवांग तक की अपनी यात्रा का अनुभव मुझे बताया। आपको भी ये जानकर सुखद हैरानी होगी कि कई दिन की इस यात्रा में दूर–दराज इलाकों में भी उन्हें cash निकालने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। जिन जगहों पर कुछ साल पहले तक internet की अच्छी सुविधा भी नहीं थी, वहां भी अब UPI से payment की सुविधा मौजूद है। सागरिका, प्रेक्षा और आनंदिता के अनुभवों को देखते हुए मैं आपसे भी आग्रह करूँगा कि Cashless Day Out का experiment करके देखें, जरुर करें।

हमारी विचारधारा 'पंच निष्ठा'

भारती राजनीति में भाजपा कार्यकर्ता आधारित पार्टी है। पार्टी को सर्वस्पर्शी बनाने के लिए संगठन में प्रशिक्षण निरन्तर चलते रहते हैं। कार्यकर्ता विकास की प्रक्रिया निरन्तर जारी रहती है। इस क्रम में जिला स्तर के कार्यकर्ताओं का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हआ। जिसमें काल, समय, परिस्थिति चुनौती को देखते हुए अनेक विषयों पर प्रशिक्षण हुए जिससे हमारी विचार धार नये परिवेश में कार्यकर्ता समझे इसके प्रयास हुए। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सिद्धांतों और आदर्शों पर आधारित राजनीतिक दल है। यह किसी परिवार, जाति या वर्ग विशेष की पार्टी नहीं है। भाजपा कार्यकर्ताओं को जोड़ने वाला सूत्र है––भारत के सांस्कृतिक मूल्य, हमारी निष्ठाएं और भारत के परम वैभव को प्राप्त करने का संकल्प, और साथ ही यह आत्मविश्वास कि अपने पुरुषार्थ से हम इन्हें प्राप्त करेंगे।

भाजपा की विचारधारा को एक पंक्ति में कहना हो तो वह है **'भारत माता की जय'**। भारत का अर्थ है 'अपना देश'। देश जो हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला है और जिसे प्रकृति ने एक अखंड भूभाग के रूप में हमें दिया है। यह हमारी माता है और हम सभी भारतवासी उसकी संतान हैं। एक मां की संतान होने के नाते सभी भारतवासी सहोदर यानि भाई–बहन हैं। भारत माता कहने से एक भूमि और एक जन के साथ हमारी एक संस्कृति का भी ध्यान बना रहता है। इस माता की जय में हमारा संकल्प घोषित होता है और परम वैभव में है मां की सभी संतानों का सुख और अपनी संस्कृति के आधार पर विश्व में शांति व सौख्य की स्थापना। यही है **'भारत माता की जय'**।

भाजपा के संविधान की धारा 3 के अनुसार एकात्म मानववाद हमारा मूल दर्शन है। यह दर्शन हमें मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एकात्म यानि समग्र विचार करना सिखाता है। यह दर्शन मनुष्य और समाज के बीच कोई संघर्ष नहीं देखता, बल्कि मनुष्य के स्वाभाविक विकास–क्रम और उसकी चेतना के विस्तार से परिवार, गाँव, राज्य, देश और सृष्टि तक उसकी पूर्णता देखता है। यह दर्शन प्रकृति और मनुष्य में मां का संबंध देखता है, जिसमें प्रकृति को स्वस्थ बनाए रखते हुए अपनी आवश्यकता की चीज़ों का दोहन किया जाता है।

भाजपा के संविधान की धारा 4 में पांच निष्ठाएं वर्णित हैं। एकात्म मानववाद और ये पांचों निष्ठाएं हमारे वैचारिक अधिष्ठान का पूरा ताना–बना बुनती हैं।

(1) राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकात्मता : हमारा मानना है कि भारत राष्ट्रों का समूह नहीं है, नवोदित राष्ट्र भी नहीं है, बल्कि यह सनातन राष्ट्र है। हिमालय से कन्याकुमारी तक प्रकृति द्वारा निर्धारित यह देश है। इस देश–भूमि को देशवासी माता मानते हैं। उनकी इस भावना का आधार प्राचीन संस्कृति और उससे मिले जीवनमूल्य हैं। हम इस विशाल देश की विविधता से परिचित हैं। विविधता इस देश की शोभा है और इन सबके बीच एक व्यापक एकात्मता है। यही विविधता और एकात्मता भारत की विशेषता है। हमारा राष्ट्रवाद सांस्कृतिक है केवल भौगोलिक नहीं। इसीलिए भारत भू–मंडल में अनेक राज्य रहे, पर संस्कृति ने राष्ट्र को बांधकर रखा, एकात्म रखा।

(2) लोकतंत्र : विश्व की प्राचीनतम ज्ञात पुस्तक ऋग्वेद का एक मंत्र **'एकं सद विप्राः बहुधा वदन्ति'** उल्लेखनीय है। इसका अर्थ है, सत्य एक ही है। विद्वान इसे अलग–अलग तरीके से व्यक्त करते हैं। भारत के स्वभाव में यह बात आ गई है कि किसी एक के पास सच नहीं है। मैं जो कह रहा हूं वह भी सही है, आप जो कह रहे हैं वह भी सही है। विचार स्वातंत्र्य (फ्रीडम ऑफ थॉट्स एंड एक्सप्रेशन) का आधार यह मंत्र है।

संस्कृत में एक और मंत्र है– 'वादे वादे जयते तत्त्व बोधः'। इसका अर्थ है चर्चा से हम ठीक तत्त्व तक पहुँच जाते हैं। चर्चा से सत्य तक पहुंचने का यह मंत्र भारत में लोकतंत्रीय स्वभाव बनाता है। इन दोनों मन्त्रों ने भारत में लोकतंत्र का स्वरूप गढा–निखारा है। भारतीय समाज ने इसी लोकतंत्र का स्वभाव ग्रहण किया है। लोकतंत्र भारतीय समाज के अनुरूप व्यवस्था है। भाजपा ने अपने दल के अंदर भी लोकतंत्रीय व्यवस्था को मजबूती से अपनाया है। भाजपा संभवतः अकेला ऐसा राजनीतिक दल है, जो हर तीसरे साल स्थानीय समिति से लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष तक के नियमित चुनाव कराता है। सत्ता का किसी एक जगह केन्द्रित होना लोकतंत्रीय स्वभाव के विपरीत है। इसीलिए लोकतंत्र विकेन्द्रित शासन व्यवस्था है। केन्द्र, राज्य, नगरपालिका और पंचायत सभी के काम और ज़िम्मेदारियां बंटी हुई हैं। सब को

अपनी–अपनी जिम्मेदारियां भारत के संविधान से प्राप्त होती हैं।

लोकतंत्र के प्रति हमारी निष्ठा आपातकाल में जगजाहिर हुई। 25 जून, 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत में आपातकाल घोषित कर दिया था। नागरिकों के प्रकृति–प्रदत्त मौलिक अधिकार भी निरस्त कर दिए गए थे। यहां तक कि जीवन का अधिकार भी छीन लिया गया था। जिसका जनसंघ, संघ परिवार ने विरोध कर लोकतंत्र की रक्षा किया।

(3) सामाजिक व आर्थिक विषयों पर गांधीवादी दृष्टिकोण : जिससे शोषणमुक्त और समतायुक्त समाज की स्थापना हो सके: गांधीवादी सामाजिक दृष्टिकोण भेदभाव और शोषण से मुक्त समतामूलक समाज की स्थापना है। दुर्भाग्य से एक समय में, जन्म के आधार पर छोटे या बड़े का निर्धारण होने लगा, अर्थात् जाति व्यवस्था विषैली होकर छुआछूत तक पहुंच गई। भक्ति काल के पुरोधाओं से लेकर महात्मा गांधी व डॉ अम्बेडकर को इससे समाज को मुक्त कराने के लिए संघर्ष करना पड़ा। आज भी यह विषमता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।

यही वजह है कि अनुसूचित जाति के साथ अनेक प्रकार से भेदभाव होते हैं और उन्हें यह अहसास कराया जाता है कि वे बाकी जातियों से कमतर हैं। शिक्षित और धनवान हो जाने से भी यह विषमता दूर नहीं होती। मनुष्य मात्र की समानता और गरिमा का यह दार्शनिक आधार है। देश को सामाजिक शोषण से मुक्त कराकर समरस समाज बनाना हमारी आधारभूत निष्ठा है। किसी एक राज्य या कुछ व्यक्तियों के हाथ में सत्ता के केन्द्रीकरण के अपने खतरे होते हैं और यह स्थिति सत्ता में भ्रष्टाचार को बढ़ाती है। लेकिन गांधीजी की मांग सही साधनों पर भरोसा करने की भी थी। उन्होंने किसी 'वाद' को जन्म नहीं दिया, बल्कि उनके दृष्टिकोण जीवन के प्रति एकात्म प्रयास को उजागर करते हैं।

महात्मा गांधी के दृष्टिकोण के आधार पर भाजपा भी आर्थिक शोषण के खिलाफ है और साधनों के समुचित बंटवारे की पक्षधर है। हम इस बात पर विश्वास नहीं रखते कि कमाने वाला ही खाएगा। हमारी दृष्टि में कमा सकने वाला कमाएगा और जो जन्मा है वह खाएगा। हमारा मानना है कि समाज और राज्य सबकी चिन्ता करेंगे। दीनदयालजी मनुष्य की मूल आवश्यकताओं में रोटी, कपड़ा और मकान के साथ शिक्षा और रोज़गार को भी जोड़ते थे। आर्थिक विषमताओं की बढ़ती खाई को पाटा जाना चाहिए। अशिक्षा, कुपोषण और बेरोज़गारी से एक बड़ा युद्ध लड़कर ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' का आदर्श प्राप्त करना हमारी मौलिक निष्ठा है। हमारे गांधीवादी दृष्टिकोण ने यह सिखाया है कि इसके लिए हमें विचार या तंत्र बाहर से आयात करने की ज़रूरत नहीं है। अपने सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर अपनी बुद्धि, प्रतिभा और पुरुषार्थ से हम इसे पा सकते हैं।

(4) सकारात्मक पंथ–निरपेक्षता एवं सर्वपंथसमभाव : एक समय पश्चिमी देशों में पोप और पादरियों का राजकाज में अत्यधिक नियंत्रण हो गया था। अगर कोई अपराध करता था तो चर्च में एक निर्धारित राशि का भुगतान करके वह अपराधमुक्त होने का प्रमाण पत्र ले सकता था। नतीजा यह हुआ कि शासन में धर्म के असहनीय हस्तक्षेप का विरोध शुरू हो गया। विरोधियों का तर्क था कि धर्म घर के अंदर की वस्तु है। इस विरोध आन्दोलन से धर्मनिरपेक्षता का प्रादुर्भाव हुआ। भारत में धर्म किसी पुस्तक, पैगम्बर या पूजा पद्धति में निहित नहीं है। हमारे यहाँ धर्म का अर्थ है जीवन शैली। अग्नि का धर्म है दाह करना और जल का धर्म है शीतलता। राजा को कैसे रहना और व्यवहार करना है यह है उसका राज–धर्म, पिता की क्या ज़िम्मेदारियां हैं, उसे क्या करना चाहिए, यह है पितृ–धर्म। इसी तरह पुत्र–धर्म और पत्नी–धर्म हैं। इसीलिए भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म से निरपेक्ष हो जाना नहीं है।

भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सर्व पंथ समादर भाव है। शासक किसी पंथ को, किसी भी पूजा पद्धति को राज–पंथ, राज–धर्म या राज–पद्धति नहीं मानेगा। वह सभी धर्मों, पंथों एवं पद्यतियों को समान आदर देता है। हमारा उद्देश्य है, न्याय सबके लिए और तुष्टिकरण किसी का नहीं। इसका व्यावहारिक अर्थ है 'सबका साथ सबका विकास'। हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि हिन्दओं को मुसलमानों से और मुसलमानों को हिन्दुओं से नहीं लड़ना है, बल्कि दोनों को मिल कर गरीबी से लड़ना है।

(5) मूल्य आधारित राजनीति : भाजपा ने जो पाचंवा अधिष्ठान अपनाया है वह है 'मूल्य आधारित राजनीति'। एकात्म मानववाद मूल्य आधारित राजनीति पर विश्वास करता है। नियमों और मूल्यों के निर्धारण के वायदे के बिना राजनीतिक गतिविधि सिर्फ निज स्वार्थपूर्ति का खेल है। भाजपा 'मूल्य आधारित राजनीति' के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है और इस तरह सार्वजनिक जीवन का शुद्धिकरण एवं नैतिक मूल्यों की पुनःस्थापना उसका लक्ष्य है।

आज देश का संकट मूल रूप से नैतिक संकट है और राजनीति विशुद्ध रूप से ताकत का खेल बन गई है। यही वजह है कि देश नैतिक ताकत के लुप्तिकरण से जूझ रहा है और मुश्किलों का सामना करने की अपनी क्षमता को खोता जा रहा है। जब हम इन पांचों निष्ठाओं की बात करते हैं तो अपने आसपास या देश में घटे कुछ ऐसे प्रसंग ध्यान में आते हैं, जिनसे लगता है कि हम हर स्तर पर पूरी तरह सभी निष्ठाओं का पालन करते हैं, यह नहीं कहा जा सकता। पर, हम यह विश्वास से कह सकते हैं कि ये निष्ठाएं हमारे लिए प्रकाश–स्तम्भ की तरह हैं। हम सबको यह प्रयत्न करते रहना ज़रूरी है कि हम अपना जीवन और अपनी पार्टी को इन निष्ठाओं के आधार पर चलाएं।

———————

जल संलक्षण में युवा पीढ़ी आगे आये : मोदी

मेरे प्यारे देशवासियो, देश के ज़्यादातर हिस्सों में गर्मी बहुत तेजी से बढ़ रही है। बढ़ती हुई ये गर्मी, पानी बचाने की हमारी ज़िम्मेदारी को भी उतना ही बढ़ा देती है। हो सकता है कि आप अभी जहां हों, वहां पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो। लेकिन, आपको उन करोड़ों लोगों को भी हमेशा याद रखना है, जो जल संकट वाले क्षेत्रों में रहते हैं, जिनके लिए पानी की एक–एक बूंद अमृत के समान होती है।

साथियो, इस समय आजादी के 75वें साल में, आजादी के अमृत महोत्सव में, देश जिन संकल्पों को लेकर आगे बढ़ रहा है, उनमें जल संरक्षण भी एक है। अमृत महोत्सव के दौरान देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाये जायेंगे। आप कल्पना कर सकते हैं कि कितना बड़ा अभियान है। वो दिन दूर नहीं जब आपके अपने शहर में 75 अमृत सरोवर होंगे। मैं, आप सभी से, और खासकर, युवाओं से चाहूँगा कि वो इस अभियान के बारे में जानें और इसकी जिम्मेदारी भी उठायें। अगर आपके क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा कोई इतिहास है, किसी सेनानी की स्मृति है, तो उसे भी अमृत सरोवर से जोड़ सकते हैं। वैसे मुझे ये जानकर अच्छा लगा कि अमृत सरोवर का संकल्प लेने के बाद कई स्थलों पर इस पर तेजी से काम शुरू हो चुका है। मुझे यूपी के रामपुर की ग्राम पंचायत पटवाई के बारे में जानकारी मिली है। वहां पर ग्राम सभा की भूमि पर एक तालाब था, लेकिन वो, गंदगी और कूड़े के ढेर से भरा हुआ था। पिछले कुछ हफ्तों में बहुत मेहनत करके, स्थानीय लोगों की मदद से, स्थानीय स्कूली बच्चों की मदद से, उस गंदे तालाब का कायाकल्प हो गया है। अब, उस सरोवर के किनारे retaining wall, चारदीवारी, food court, फव्वारे और lightening भी न जाने क्या–क्या व्यवस्थायें की गयी है। मैं रामपुर की पटवाई ग्राम पंचायत को, गांव को लोगों को, वहां के बच्चों को इस प्रयास के लिए बहुत–बहुत बधाई देता हूं।

साथियो, पानी की उपलब्धता और पानी की क़िल्लत, ये किसी भी देश की प्रगति और गति को निर्धारित करते हैं। आपने भी गौर किया होगा कि 'मन की बात' में, मैं, स्वच्छता जैसे विषयों के साथ ही बार–बार जल संरक्षण की बात जरुर करता हूँ। हमारे तो ग्रंथों में स्पष्ट रूप से कहा गया है –

पानियम् परमम् लोके, जीवानाम् जीवनम् समृतम्।।

अर्थात, संसार में, जल ही, हर एक जीव के, जीवन का आधार है और जल ही सबसे बड़ा संसाधन भी है, इसीलिए तो हमारे पूर्वजों ने जल संरक्षण के लिए इतना ज़ोर दिया। वेदों से लेकर पुराणों तक, हर जगह पानी बचाने को, तालाब, सरोवर आदि बनवाने को, मनुष्य का सामाजिक और आध्यात्मिक कर्तव्य बताया गया है। वाल्मीकि रामायण में जल स्त्रोतों को जोड़ने पर, जल संरक्षण पर, विशेष जोर दिया गया है। इसी तरह, इतिहास के Students जानते होंगे, सिन्धु–सरस्वती और हडप्पा सभ्यता के दौरान भी भारत में पानी को लेकर कितनी विकसित Engineering होती थी। प्राचीन काल में कई शहर में जल–स्त्रोतों का आपस में Interconnected System होता था और ये वो समय था, जब, जनसंख्या उतनी नहीं थी, प्राकृतिक संसाधनों की क़िल्लत भी नहीं थी, एक प्रकार से विपुलता थी, फिर भी, जल संरक्षण को लेकर, तब, जागरूकता बहुत ज्यादा थी। लेकिन, आज स्थिति इसके उलट है। मेरा आप सभी से आग्रह है, आप अपने इलाके के ऐसे पुराने तालाबों, कुँओं और सरोवरों के बारे में जानें। अमृत सरोवर अभियान की वजह से जल संरक्षण के साथ–साथ आपके इलाके की पहचान भी बनेगी। इससे शहरों में, मोहल्लों में, स्थानीय पर्यटन के स्थल भी विकसित होंगे, लोगों को घूमने–फिरने की भी एक जगह मिलेगी।

साथियो, जल से जुड़ा हर प्रयास हमारे कल से जुड़ा है। इसमें पूरे समाज की ज़िम्मेदारी होती है। इसके लिए सदियों से अलग–अलग समाज, अलग–अलग प्रयास लगातार करते आये हैं। जैसे कि, **"कच्छ के रण"** की एक जनजाति 'मालधारी' जल संरक्षण के लिए "वृदास" नाम का तरीका इस्तेमाल करती है। इसके तहत छोटे कुएं बनाए जाते हैं और उसके बचाव के लिए आस–पास पेड़–पौधे लगाए जाते हैं। इसी तरह मध्य प्रदेश की भील जनजाति ने अपनी एक ऐतिहासिक परम्परा "हलमा" को जल संरक्षण के लिए इस्तेमाल किया। इस परम्परा के अंतर्गत इस जन–जाति के लोग पानी से जुड़ी समस्याओं का उपाय ढूँढने के लिए एक जगह पर एकत्रित होते हैं। हलमा परम्परा से मिले सुझावों की वजह से इस क्षेत्र में पानी का संकट कम हुआ है और भू–जल स्तर भी बढ़ रहा है। साथियो, ऐसी ही कर्तव्य का भाव अगर सबके मन में आ जाए, तो जल संकट से जुड़ी बड़ी से बड़ी चुनौतियों का समाधान हो सकता है। आइये, आजादी के अमृत महोत्सव में हम जल–संरक्षण और जीवन–संरक्षण का

संकल्प लें। हम बूंद–बूंद जल बचाएंगे और हर एक जीवन बचाएंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपने देखा होगा कि कुछ दिन पहले मैंने अपने युवा दोस्तों से, students से 'परीक्षा पर चर्चा' की थी। इस चर्चा के दौरान कुछ students ने कहा कि उन्हें Exam में गणित से डर लगता है। इसी तरह की बात कई विद्यार्थियों ने मुझे अपने संदेश में भी भेजी थी। उस समय ही मैंने ये तय किया था कि गणित–mathematics पर मैं इस बार के 'मन की बात' में जरुर चर्चा करुंगा। साथियो, गणित तो ऐसा विषय है जिसे लेकर हम भारतीयों को सबसे ज्यादा सहज होना चाहिए। आखिर, गणित को लेकर पूरी दुनिया के लिए सबसे ज्यादा शोध और योगदान भारत के लोगों ने ही तो दिया है। शून्य, यानी, जीरो की खोज और उसके महत्व के बारे में आपने खूब सुना भी होगा। अक्सर आप ये भी सुनते होंगे कि अगर zero की खोज न होती, तो शायद हम, दुनिया की इतनी वैज्ञानिक प्रगति भी न देख पाते। Calculus से लेकर Computers तक – ये सारे वैज्ञानिक आविष्कार Zero पर ही तो आधारित हैं। भारत के गणितज्ञों और विद्वानों ने यहाँ तक लिखा है कि–

यत किंचित वस्तु तत सर्वं, गणितेन बिना नहि !

अर्थात, इस पूरे ब्रह्मांड में जो कुछ भी है, वो सब कुछ गणित पर ही आधारित है। आप विज्ञान की पढ़ाई को याद करिए, तो इसका मतलब आपको समझ आ जाएगा। विज्ञान का हर principle एक Mathematical Formula में ही तो व्यक्त किया जाता है। न्यूटन के laws हों, Einstein का famous equation, ब्रह्मांड से जुड़ा सारा विज्ञान एक गणित ही तो है। अब तो वैज्ञानिक भी Theory of Everything की भी चर्चा करते हैं, यानी, एक ऐसा Single formula जिससे ब्रह्मांड की हर चीज को अभिव्यक्त किया जा सके। गणित के सहारे वैज्ञानिक समझ के इतने विस्तार की कल्पना हमारे ऋषियों ने हमेशा से की है। हमने अगर शून्य का अविष्कार किया, तो साथ ही अनंत, यानि, infinite को भी express किया है। सामान्य बोल–चाल में जब हम संख्याओं और numbers की बात करते हैं, तो million, billion और trillion तक बोलते और सोचते हैं, लेकिन, वेदों में और भारतीय गणित में ये गणना बहुत आगे तक जाती है। हमारे यहाँ एक बहुत पुराना श्लोक प्रचलित है –

एकं दशं शतं चैव, सहस्रम् अयुतं तथा।
लक्षं च नियुतं चैव, कोटिः अर्बुदम् एव च।।
वृन्दं खर्वो निखर्वः च, शंखः पद्मः च सागरः।
अन्त्यं मध्यं परार्धः च, दश वृद्ध्या यथा क्रमम्।।

इस श्लोक में संख्याओं का order बताया गया है। जैसे कि

एक, दस, सौ, हज़ार और अयुत !
लाख, नियुत और कोटि यानी करोड़।।

इसी तरह ये संख्या जाती है – शंख, पद्म और सागर तक। एक सागर का अर्थ होता है कि 10 की power 57। यही नहीं इसके आगे भी, ओघ और महोघ जैसी संख्याएँ होती हैं। एक महोघ होता है – 10 की power 62 के बराबर, यानी, एक के आगे 62 शून्य, sixty two zero हम इतनी बड़ी संख्या की कल्पना भी दिमाग में करते हैं तो मुश्किल होती है, लेकिन, भारतीय गणित में इनका प्रयोग हजारों सालों से होता आ रहा है। अभी कुछ दिन पहले मुझसे Intel कंपनी के CEO मिले थे। उन्होंने मुझे एक painting दी थी उसमें भी वामन अवतार के जरिये गणना या माप की ऐसी ही एक भारतीय पद्धति का चित्रण किया गया था। Intel का नाम आया तो Computer आपके दिमाग में अपने आप आ गया होगा। Computer की भाषा में आपने binary system के बारे में भी सुना होगा, लेकिन, क्या आपको पता है, कि हमारे देश में आचार्य पिंगला जैसे ऋषि हुए थे, जिन्होंने, binary की कल्पना की थी। इसी तरह, आर्यभट्ट से लेकर रामानुजन जैसे गणितज्ञों तक गणित के कितने ही सिद्धांतों पर हमारे यहाँ काम हुआ है।

साथियो, हम भारतीयों के लिए गणित कभी मुश्किल विषय नहीं रहा, इसका एक बड़ा कारण हमारी वैदिक गणित भी है। आधुनिक काल में वैदिक गणित का श्रेय जाता है – श्री भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज को। उन्होंने Calculation के प्राचीन तरीकों को तमअपअम किया और उसे वैदिक गणित नाम दिया। वैदिक गणित की सबसे खास बात ये थी कि इसके जरिए आप कठिन से कठिन गणनाएँ पलक झपकते ही मन में ही कर सकते हैं। आज–कल तो social media पर वैदिक गणित सीखने और सिखाने वाले ऐसे कई युवाओं के videos भी आपने देखे होंगे।

साथियो, आज 'मन की बात' में वैदिक गणित सिखाने वाले एक ऐसे ही साथी हमारे साथ भी जुड़ रहे हैं। ये साथी हैं कोलकाता के गौरव टेकरीवाल जी। और वो पिछले दो–ढाई दशक से वैदिक mathematics इस movement को बड़े समर्पित भाव से आगे बढ़ा रहे हैं। आईये, उनसे ही कुछ बातें करते हैं।

नदी संस्कृति पुर्नर्जीवित हो!

सृष्टि में पांच तत्व जीवन के मूल सूत्र हैं तो नदियाँ जीवन रेखा है। उपभोक्तावाद अधकचरे कुछ विज्ञान ने अपनी सुविधा के लिए नदियों को प्रदूशित किया आज मानव प्रकृति को चुनौती दे रहा है।

लखनऊ में गंगा और सहायक नदियों की अविरलता और स्वच्छता के लिए काम कर रहे संगठन 'गंगा समग्र' की तरफ से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का 16 अप्रैल को हुआ। इस अधिवेशन के दूसरे दिनयोगी आदित्यनाथ जी ने अधिवेशन का समापन किया।

योगी जी ने गंगा नदी की स्वच्छता के लिए चलाए जा रहे नामामि गंगा परियोजना का जिक्र कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की सोंच प्रयास की सराहना करते हुए उन्होंने कहा, "पूरी दुनिया के अंदर जब नदी संस्कृति की बात होती है तब अकेले गंगा एक ऐसी नदी है, जिसने 10 लाख किलोमीटर से अधिक भूभाग को दुनिया का सबसे उर्वरा भूभाग बनाया है। जिस क्षेत्र में हम सबको रहने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, इस पूरे क्षेत्र की उर्वरता के पीछे अगर कोई महत्वपूर्ण कारक है तो वह है मां गंगा।

आदित्यनाथ ने कहा, "हमारे अधिकतर लोग तीर्थ गंगा के तटीय क्षेत्र में ही स्थित है। गंगोत्री से लेकर गंगा सागर तक के तीर्थों का अवलोकन करेंगे तो हम सब देख सकते हैं कि गंगा के प्रति हमारी आस्था किस रूप में रही है।

उन्होंने कहा कि गंगा के आध्यात्मिक, समाजिक और आर्थिक महत्वों को देखते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने साल 2016 में नामामि गंगे परियोजना का शुभारंभ किया और गंगा को राष्ट्रीय नदी के रूप में मान्यता दी।

"मां गंगा के बारे में योजनाएं पहले भी बनती थीं. 1986 में गंगा एक्शन प्लान बना था. कार्य प्रारंभ भी हुए थे. केंद्र और राज्य सरकारों को मिलकर इस पूरे कार्यक्रम के साथ जोड़ना था। पांच राज्य– यूपी, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल इस अभियान के साथ जुड़ें।

उन्होंने कहा, "जब नामामि गंगा परियोजना से पहले इन सभी कार्यक्रमों का मूल्यांकन हुआ तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि गंगा पहले से ज्यादा प्रदूषित हुई है। नामामि गंगा परियोजना पीएम मोदी की अत्यंत महत्वपूर्ण परियोजना है, जिसमें आजादी के बाद भारत की नदी संस्कृति को पुनर्जीवित करने का एक महत्वूर्ण कार्य प्रारंभ किया।

अधिवेशन में गंगा से जुड़े 5 राज्यों के करीब 600 कार्यकर्ता रहे हैं. उनको गंगा को स्वच्छ रखने के लिए प्रशिक्षित भी किया गया। जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सह सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल जी गंगा समग्र के राष्ट्रीय संगठन मंत्री रामाशीष जी ने भी सम्बोधित किया।

अधिवेशन में एक प्रस्ताव पास किया गया, जिसके तहत नदियों, तालाबों जैसे जल स्त्रोतों को जीवित प्राणी के रूप में मान्य करने, भू–अभिलेखों में उनका उल्लेख करने और किसी भी नदी में न्यूनतम कितना जल होना चाहिए, समिति बनाकर इसको तय करने और उस न्यूनतम जल की व्यवस्था सुनिश्चित करने की बात कही गई है।

गंगा के प्रति हमारे द्वारा किए जाने वाले एक छोटे से प्रयास से हम न केवल भारत की नदी संस्कृति व सनातन आस्था को सुरक्षित रख पाएंगे, बल्कि आने वाली पीढ़ी के भविष्य को भी सुरक्षित रखने में हमें मदद मिलेगी।

अधिवेशन में इस पूरे अभियान को जन–जन का संकल्प बनाने का निर्णय लिया गया। जन भागीदार, जन प्रयास से देश का नदियाँ पवित्र और सरस सलिला होगी।

सामाजिक सांस्कृतिक कल्याण का पर्व है ''अक्षय तृतीया''

धर्मेन्द्र त्रिपाठी

लोक कल्याणकारी राज व्यवस्था में माध्यमिक सांस्कृतिक अनुश्ठाानों का महत्वपूर्ण स्थान है। वैषाख षुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को अक्षय तृतिया एक महान पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर समुद्र या गंगा स्नान करने के बाद भगवान विष्णु की शान्त चित्त होकर विधि विधान से पूजा करने का विधान है। नैवेद्य में जौ या गेहूँ का सत्तू, ककड़ी और चने की दाल अर्पित करना चाहिए। तत्पश्चात फल, फूल, बरतन, तथा वस्त्र आदि दान करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती है। ब्राह्मण को भोजन करवाना कल्याणकारी समझा जाता है। मान्यता है कि इस दिन सत्तू अवश्य खाना चाहिए तथा नए वस्त्र और आभूषण पहनने चाहिए। गौ, भूमि, स्वर्ण पात्र इत्यादि का दान भी इस दिन किया जाता है। यह तिथि वसन्त ऋतु के अन्त और ग्रीष्म ऋतु का प्रारम्भ का दिन भी है इसलिए अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे घडे, कुल्हड, सकोरे, पंखे, खडाऊँ, छाता, चावल, नमक, घी, खरबूजा, ककड़ी, चीनी, साग, इमली, सत्तू आदि गरमी में लाभकारी वस्तुओं का दान पुण्यकारी माना गया है। इस दान के पीछे यह लोक विश्वास है कि इस दिन जिन–जिन वस्तुओं का दान किया जाएगा, वे समस्त वस्तुएँ स्वर्ग या अगले जन्म में प्राप्त होगी। इस दिन लक्ष्मी नारायण की पूजा सफेद कमल अथवा सफेद गुलाब या पीले गुलाब से करना चाहिये।

सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि प्रशस्तानि सदार्चने।
दानकाले च सर्वत्र मन्त्र मेत मुदीरयेत्।।

अर्थात सभी महीनों की तृतीया में सफेद पुष्प से किया गया पूजन प्रशंसनीय माना गया है।

ऐसी भी मान्यता है कि अक्षय तृतीया पर अपने अच्छे आचरण और सद्गुणों से दूसरों का आशीर्वाद लेना अक्षय रहता है। भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा विशेष फलदायी मानी गई है। इस दिन किया गया आचरण और सत्कर्म अक्षय रहता है।

भविष्य पुराण के अनुसार इस तिथि की युगादि तिथियों में गणना होती है, सतयुग और त्रेता युग का प्रारंभ इसी तिथि से हुआ है। भगवान विष्णु ने नर–नारायण, हयग्रीव और परशुराम जी का अवतरण भी इसी तिथि को हुआ था। ब्रह्माजी के पुत्र अक्षय कुमार का आविर्भाव इसी तिथि को हुआ था। जैन धर्म में भी लोक कल्याण के लिए बहुत महत्व है।

जैन धर्मावलम्बियों का महान धार्मिक पर्व है। इस दिन जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान ने एक वर्ष की पूर्ण तपस्या करने के पश्चात इक्षु (शोरडी–गन्ने) रस से पारायण किया था। जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर श्री आदिनाथ भगवान ने सत्य व अहिंसा का प्रचार करने एवं अपने कर्म बन्धनों को तोड़ने के लिए संसार के भौतिक एवं पारिवारिक सुखों का त्याग कर जैन वैराग्य अंगीकार कर लिया। सत्य और अहिंसा के प्रचार करते–करते आदिनाथ प्रभु हस्तिनापुर गजपुर पधारे जहाँ इनके पौत्र सोमयश का शासन था। प्रभु का आगमन सुनकर सम्पूर्ण नगर दर्शनार्थ उमड़ पड़ा सोमप्रभु के पुत्र राजकुमार श्रेयांस कुमार ने प्रभु को देखकर उसने आदिनाथ को पहचान लिया और तत्काल शुद्ध आहार के रूप में प्रभु को गन्ने का रस दिया, जिससे आदिनाथ ने व्रत का पारायण किया। जैन धर्मावलंबियों का मानना है कि गन्ने के रस को इक्षुरस भी कहते हैं इस कारण यह दिन इक्षु तृतीया एवं अक्षय तृतीया के नाम से विख्यात हो गया।

अक्षय तृतीया के दिन संपूर्ण दिन, तिथि मंगल मय होती है। इस लिए इस तिथि के दिन सभी षुभकार्यों का प्रारम्भ भी होता है। प्रसिद्ध धाम श्री बद्री नारायण के कपाट भी इसी दिन श्री विग्रह के चरण दर्षन किये जाते हैं।

लोक कल्याण के लिए अक्षय तृतीया धर्म, जप, तप, दान के लिए बहुत महत्वपूर्ण तिथि है। इस दिन के सत्कर्म अक्षय रहते हैं। भाग्योदय के लिए भगवान भास्कर की आराधना इस दिन अवष्य करना चाहिए। प्रातः काल उठकर स्नान पष्चात् तांबे के लोटे में षुद्ध जल सूर्य भगवान को पूर्व की ओर मुख करके अर्पित करें एवं इस मंत्र का जब करें।

ऊँ भास्कराय विग्रहे महातेजाय धीमही,
तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।।

इस दिन से शादी–ब्याह करने की शुरुआत हो जाती है। बड़े–बुजुर्ग अपने पुत्र–पुत्रियों के लगन का मांगलिक कार्य आरंभ कर देते हैं। अनेक स्थानों पर छोटे बच्चे भी पूरी रीति–रिवाज के साथ अपने गुड्डा–गुड़िया का विवाह रचाते हैं। इस प्रकार गाँवों में बच्चे सामाजिक कार्य व्यवहारों को स्वयं सीखते व आत्मसात करते हैं। कई जगह तो परिवार के साथ–साथ पूरा का पूरा गाँव भी बच्चों के द्वारा रचे गए वैवाहिक कार्यक्रमों में सम्मिलित हो जाता है। अक्षय तृतीया सामाजिक व सांस्कृतिक शिक्षा का अनूठा त्यौहार है। किसानों द्वारा इस दिन एकत्रित होकर आने वाले वर्ष के आगमन, कृषि पैदावार आदि का शगुन देखा जाता हैं। ऐसा विष्वास है कि इस दिन जो सगुन किसानों को मिलता हैं, वो शत–प्रतिशत सत्य होता हैं।

बुन्देलखण्ड में अक्षय तृतीया से प्रारम्भ होकर पूर्णिमा तक बडी धूमधाम से उत्सव मनाया जाता है, जिसमें कुँवारी कन्याएँ अपने भाई, पिता तथा गाँव–घर और कुटुम्ब के लोगों को शगुन बाँटती हैं और गीत गाती हैं। अक्षय तृतीया को राजस्थान में वर्षा के लिए शगुन निकाला जाता है, वर्षा की कामना की जाती है, लड़कियाँ झुण्ड बनाकर घर–घर जाकर शगुन गीत गाती हैं और लड़के पतंग उड़ाते हैं। यहाँ इस दिन सात तरह के अन्नों से पूजा की जाती है। मालवा में नए घड़े के ऊपर खरबूजा और आम के पल्लव रख कर पूजा होती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन कृषि कार्य का आरम्भ किसानों को समृद्धि देता है।

पश्चिम बंगाल हिंसा पर गठित फैक्ट फाइंडिंग टीम ने भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष को सौंपी अपनी रिपोर्ट

भारतीय जनता पार्टी ने रामपुरहाट, बीरभूम में हो रही हिंसक घटनाओं पर गहरी पीड़ा और दुःख व्यक्त किया है। पार्टी ने हिंसक घटनाओं में शामिल आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के साथ ही पीड़ितों को राहत देने और पश्चिम बंगाल सरकार से क्षेत्र में कानून व्यवस्था की स्थिति को मजबूत करने की मांग की।

30 मार्च, 2022 को जांच रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने विषम परिस्थितियों में फैक्ट फाइंडिंग टीम द्वारा निभाई गई भूमिका की सराहना की। इस अवसर पर श्री नड्डा ने पार्टी के संकल्प को दोहराते हुए कहा कि हमें जाति, पंथ और समुदाय के आधार पर भेदभाव किये बिना सच्चाई, न्याय और जनता के समग्र कल्याण के लिए काम करना है।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सामूहिक नरसंहार स्थल से नमूने और साक्ष्य एकत्र करने के लिए केंद्रीय फोरेंसिक प्रयोगशाला को जिम्मेदारी सौंपने के लिए कलकत्ता उच्च न्यायालय का धन्यवाद दिया। उन्होंने जिला न्यायाधीश द्वारा घटना स्थल पर सीसीटीवी लगाने, गवाहों की सुरक्षा और पूरी घटना की सीबीआई जांच कराने वाले आदेश को बरकरार रखने के लिए कलकत्ता उच्च न्यायालय को धन्यवाद दिया। गौरतलब है कि भाजपा द्वारा गठित फैक्ट फाइंडिंग टीम ने भी ऐसी ही मांग की थी।

इस संबंध में भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने पांच सदस्यीय फैक्ट फाइंडिंग टीम का घटनास्थल का दौरा करने, सभी साक्ष्य एकत्र करने और जल्द से जल्द रिपोर्ट सौंपने के लिए गठित किया था।

समिति के सदस्य

1. श्री ब्रजलाल, सांसद, राज्यसभा एवं पूर्व, डीजीपी, उत्तर प्रदेश
2. श्री सत्यपाल सिंह, सांसद, लोकसभा एवं पूर्व पुलिस आयुक्त, मुंबई
3. श्री के.सी. राममूर्ति, सांसद, राज्यसभा एवं पूर्व आईपीएस, कर्नाटक
4. श्री सुकांत मजूमदार, सांसद, लोकसभा एवं प्रदेश अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल, भाजपा
5. श्रीमती भारती घोष, राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं पूर्व आईपीएस, पश्चिम बंगाल

बगटूई नरसंहार पर फैक्ट फाइंडिंग टीम की रिपोर्ट के प्रमुख बिंदु:

1. तृणमूल कांग्रेस के राज में माफिया, पुलिस और राजनीतिक नेतृत्व की मिलीभगत से पश्चिम बंगाल पर शासन कर रहे हैं। राज्य में कानून व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है।
2. कानून का पालन करने वाली पश्चिम बंगाल की जनता का विश्वास टीएमसी सरकार और शासन से उठ चुका है, क्योंकि यहां अधिकारी स्वयं टीएमसी का हिस्सा बन गये हैं।
3. बगटुई गांव में हुआ नरसंहार राज्य प्रायोजित जबरन वसूली, गुंडा टैक्स, कट मनी, टोलबाजी को बढ़ावा देने और इसके अवैध लाभार्थियों के बीच प्रतिद्वंद्विता का परिणाम है।
4. भाजपा की फैक्ट फाइंडिंग टीम के कोलकाता पहुंचने के बाद ही पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने घटनास्थल का दौरा करने का फैसला किया।
5. 'मजबूर' मुख्यमंत्री के दौरे को बहाना बनाते हुए फैक्ट फाइंडिंग टीम को अपना काम करने से रोक दिया गया और टीएमसी के गुंडों ने इस जांच दल के कार्य में व्यवधान पैदा करने का काम किया, जो फैक्ट फाइंडिंग टीम पर हमला करने पर आमादा थे।
6. घटना स्थल का दौरा करने के दौरान फैक्ट फाइंडिंग टीम पर हमला हुआ, इसको लेकर पश्चिम बंगाल पुलिस के किसी अधिकारी/कांस्टेबल ने कोई कदम नहीं उठाया, इस दौरान कोई भी फैक्ट फाइंडिंग टीम के बचाव में आगे नहीं आया। डीजीपी और अन्य अधिकारियों से संपर्क करने के हमारे प्रयास विफल रहे।
7. पता चला है कि एसडीपीओ और पुलिस निरीक्षक घटनास्थल के पास ही मौजूद थे, लेकिन सूचना दिए जाने पर भी उन्होंने मौके का दौरा करने की कोई पहल नहीं की। इसके अलावा इन अधिकारियों ने आगे बुझाने जा रही दमकल की गाड़ियों को भी घटनास्थल पर पहुंचने से रोका। उनके समय पर हस्तक्षेप से कई जिंदगियों को बचाया जा सकता था।
8. स्थानीय निवासियों ने अपने जीवन और संपत्ति की सुरक्षा को देखते हुए, अपने घरों को छोड़कर भागने पर मजबूर हो गये। इसे ध्यान में रखते हुए यह अनुशंसा की जाती है कि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय महिला एवं बाल अधिकार आयोग बगटूई गांव का दौरा करे और गांव में लोगों की उनके घरों में शीघ्र वापसी के लिए विश्वास के माहौल का निर्माण करें।
9. हम दृढ़ता से अनुशंसा करते हैं कि पश्चिम बंगाल में सेवारत अखिल भारतीय सेवा अधिकारियों को उनके संवैधानिक दायित्वों का एहसास कराया जाए और केंद्र उन्हें कड़ी चेतावनी दे। ■

मार्च, 2022 में 1,42,095 करोड़ रुपये का सर्वाधिक जीएसटी संग्रह हुआ

वित्त वर्ष 2021-22 की अंतिम तिमाही के लिए औसत मासिक सकल जीएसटी संग्रह 1.38 लाख करोड़ रुपये रहा, जबकि पहली, दूसरी और तीसरी तिमाही में औसत मासिक संग्रह क्रमश: 1.10 लाख करोड़ रुपये, 1.15 लाख करोड़ रुपये और 1.30 लाख करोड़ रुपये रहा

केंद्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा एक अप्रैल को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार मार्च, 2022 महीने में एकत्र सकल जीएसटी राजस्व 1,42,095 करोड़ रुपये रहा, जिसमें सीजीएसटी 25,830 करोड़ रुपये, एसजीएसटी 32,378 करोड़ रुपये, आईजीएसटी 74,470 करोड़ रुपये (माल के आयात पर एकत्रित 39,131 करोड़ रुपये सहित) और उपकर 9,417 करोड़ रुपये (माल के आयात पर एकत्रित 981 करोड़ रुपये सहित) है। मार्च, 2022 में कुल सकल जीएसटी संग्रह जनवरी, 2022 के महीने में एकत्र किए गए 1,40,986 करोड़ रुपये के पूर्व के रिकॉर्ड को तोड़कर अब तक का सबसे अधिक है।

केंद्र सरकार ने नियमित भुगतान के रूप में आईजीएसटी से 29,816 करोड़ रुपये सीजीएसटी और 25,032 करोड़ रुपये एसजीएसटी का निपटारा किया। इसके अलावा, केन्द्र ने इस महीने में केन्द्र और राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के बीच 50:50 के अनुपात में तदर्थ आधार पर आईजीएसटी के 20,000 करोड़ रुपये का निपटारा किया है। मार्च, 2022 के महीने में केंद्र और राज्यों का कुल राजस्व नियमित और तदर्थ निपटान के बाद सीजीएसटी के लिए 65,646 करोड़ रुपये और एसजीएसटी के लिए 67,410 करोड़ रुपये है। केन्द्र ने महीने के दौरान राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को 18,252 करोड़ रुपये का जीएसटी मुआवजा भी जारी किया।

मार्च, 2022 के महीने में राजस्व पिछले साल के इसी महीने में जीएसटी राजस्व से 15% अधिक और मार्च, 2020 में जीएसटी राजस्व से 46% अधिक है। महीने के दौरान माल के आयात से राजस्व 25% अधिक था और राजस्व घरेलू लेन-देन से (सेवाओं के आयात सहित) पिछले वर्ष के इसी महीने के दौरान इन स्रोतों

से राजस्व की तुलना में 11% अधिक है। जनवरी, 2022 (6.88 करोड़) के महीने में ई-वे बिलों की तुलना में छोटा महीना होने के बावजूद फरवरी, 2022 के महीने में ई-वे बिलों की कुल संख्या 6.91 करोड़ है, जो तेज गति से व्यावसायिक गतिविधि की वसूली का संकेत देता है।

वित्त वर्ष 2021-22 की अंतिम तिमाही के लिए औसत मासिक सकल जीएसटी संग्रह 1.38 लाख करोड़ रुपये रहा, जबकि पहली, दूसरी और तीसरी तिमाही में औसत मासिक संग्रह क्रमशः 1.10 लाख करोड़ रुपये, 1.15 लाख करोड़ रुपये और 1.30 लाख करोड़ रुपये रहा। आर्थिक सुधार के साथ-साथ कर चोरी-रोधी कार्यों, विशेष रूप से फर्जी बिल बनाने वालों के खिलाफ कार्रवाई, जीएसटी को बढ़ाने में योगदान दे रही है। राजस्व में सुधार क्रम बदलने के ढांचे को ठीक करने के लिए परिषद् द्वारा किए गए विभिन्न दर युक्तिकरण उपायों के कारण भी हुआ है। ■

'एमएसएमई' को बढ़ावा देने के लिए 6,062.45 करोड़ रुपये की नई योजना को मिली मंजूरी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 30 मार्च को 'एमएसएमई के प्रदर्शन को बेहतर और तेज करने (आरएएमपी या रैम्प)' पर 808 मिलियन अमेरिकी डॉलर या 6,062.45 करोड़ रुपये के विश्व बैंक से सहायता प्राप्त कार्यक्रम को मंजूरी दी। आरएएमपी या रैम्प एक नई योजना है और इसकी शुरुआत वित्त वर्ष 2022-23 में होगी।

इस योजना के लिए कुल परिव्यय 6,062.45 करोड़ रुपये है, जिनमें से 3750 करोड़ रुपये या 500 मिलियन डॉलर विश्व बैंक से ऋण के रूप में प्राप्त होंगे और शेष 2312.45 करोड़ रुपये या 308 मिलियन डॉलर का इंतजाम भारत सरकार द्वारा किया जाएगा।

रैम्प योजना देश भर में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उन सभी 63 मिलियन उद्यमों को लाभान्वित करेगी, जो सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) की अर्हता रखते हैं। कुल 5,55,000 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम बनाने की दृष्टि से विशेष रूप से लक्षित किया गया है। इसके अलावा, इस योजना के तहत सेवा क्षेत्रों को शामिल करने के लिए लक्षित बाजार का विस्तार करने और लगभग 70,500 महिला एमएसएमई की वृद्धि करने की परिकल्पना की गई है। ■

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना की अवधि 6 माह और बढ़ानेको मिली मंजूरी

इस कदम से समाज के गरीब और कमजोर वर्गों के लोग लाभान्वित होंगे। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत लगभग 3.4 लाख करोड़ रुपये का वित्तीय परिव्यय और 1,000 एलएमटी से भी अधिक मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराया गया

समाज के गरीब और कमजोर वर्गों के प्रति चिंता एवं संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 26 मार्च को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएम-जीकेएवाई) की अवधि छह माह और यानी सितंबर, 2022 (चरण VI) तक बढ़ा दी है।

पीएम-जीकेएवाई का चरण-V मार्च, 2022 में समाप्त होने वाला था। उल्लेखनीय है कि पीएम-जीकेएवाई को अप्रैल, 2020 से ही दुनिया के सबसे बड़े खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम के रूप में लागू किया जाता रहा है। केंद्र सरकार ने अब तक लगभग 2.60 लाख करोड़ रुपये खर्च किए हैं एवं अगले 6 महीनों में सितंबर, 2022 तक 80,000 करोड़ रुपये और खर्च किए जाएंगे, जिससे पीएम-जीकेएवाई के तहत कुल खर्च लगभग 3.40 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को छू जाएगा।

इस योजना के तहत पूरे भारत में लगभग 80 करोड़ लाभार्थियों को कवर किया जाएगा और पहले की तरह ही इस योजना के लिए आवश्यक धनराशि का इंतजाम पूरी तरह से भारत सरकार द्वारा ही किया जाएगा।

भले ही कोविड-19 महामारी का प्रकोप काफी हद तक कम हो गया हो और देश में आर्थिक गतिविधियां निरंतर तेज गति पकड़ रही हों, लेकिन पीएम-जीकेएवाई की अवधि बढ़ाने से यह सुनिश्चित होगा कि आर्थिक रिकवरी के मौजूदा समय में कोई भी गरीब परिवार भूखा सोने पर विवश न हो।

विस्तारित पीएम-जीकेएवाई के अंतर्गत प्रत्येक लाभार्थी को एनएफएसए के तहत मिल रहे खाद्यान्न के अपने सामान्य कोटे के अलावा प्रति-व्यक्ति प्रति-माह अतिरिक्त 5 किलो निःशुल्क राशन मिलेगा। इसका मतलब है कि प्रत्येक गरीब परिवार को सामान्य मात्रा से लगभग दोगुना राशन मिलेगा।

उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार ने पीएम-जीकेएवाई के तहत चरण V तक लगभग 759 एलएमटी खाद्यान्न निःशुल्क आवंटित किया था। इस विस्तार (चरण VI) के तहत 244 एलएमटी निःशुल्क खाद्यान्न के साथ पीएम-जीकेएवाई के तहत निःशुल्क खाद्यान्न का कुल आवंटन अब 1,003 एलएमटी हो गया है।

देश भर में लगभग 5 लाख राशन की दुकानों पर लागू 'एक राष्ट्र, एक राशन कार्ड' (ओएनओआरसी) योजना के माध्यम से किसी भी प्रवासी श्रमिक या लाभार्थी द्वारा निःशुल्क राशन का लाभ उठाया जा सकता है। अब तक, इस योजना के तहत हुए 61 करोड़ से अधिक लेन-देन के जरिये लाभार्थियों को उनके घरों से दूर लाभ मिला है।

सदी की सबसे भीषण महामारी के बावजूद केंद्र सरकार द्वारा किसानों को अब तक के सबसे अधिक भुगतान के साथ अनाजों की अब तक की सबसे अधिक सरकारी खरीद के कारण यह संभव हुआ है। कृषि क्षेत्र में इस रिकॉर्ड उत्पादन के लिए भारतीय किसान, यानी 'अन्नदाता'- बधाई के पात्र हैं। ■

राष्ट्रव्यापी कोविड टीकाकरण के तहत अब तक लगाए गए 185.20 करोड़ से अधिक टीके

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार भारत का कोविड-19 टीकाकरण कवरेज सात अप्रैल की सुबह 7 बजे तक (अंतिम रिपोर्ट) 185.20 करोड़ से अधिक हो गया। इस उपलब्धि को 2,23,20,478 टीकाकरण सत्रों के जरिये प्राप्त किया गया। 12-14 आयु वर्ग के लिए कोविड-19 टीकाकरण 16 मार्च, 2022 को प्रारंभ हुआ था। अब तक 2.04 करोड़ से अधिक किशोरों को कोविड-19 टीके की पहली खुराक लगाई गई।

लगातार गिरावट दर्ज करते हुए भारत में सक्रिय मामले कम होकर 11,639 रह गए। सक्रिय मामले कुल मामलों के 0.03 प्रतिशत हैं। नतीजतन, भारत में स्वस्थ होने की दर 98.76 प्रतिशत है। महामारी की शुरुआत के बाद से स्वस्थ होने वाले मरीजों की कुल संख्या 4,24,98,789 हो गई है। उल्लेखनीय है कि भारत में अब तक कुल 79.25 करोड़ से अधिक (79,25,09,451) जांच की गई है।

साप्ताहिक और दैनिक पुष्टि वाले मामलों की दर में भी लगातार गिरावट दर्ज की गई है। देश में साप्ताहिक पुष्टि वाले मामलों की दर 0.22 प्रतिशत है और दैनिक रूप से पुष्टि वाले मामलों की दर भी 0.21 प्रतिशत है। ■

अंतरराज्यीय सीमा विवाद के निपटारे हेतु असम और मेघालय के बीच हुए ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर

असम और मेघालय के बीच 12 में से 6 मुद्दों पर समझौता हुआ और इससे दोनों राज्यों के बीच लगभग 70 प्रतिशत सीमा विवादमुक्त हो गई

असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंत बिस्वा सरमा और मेघालय के मुख्यमंत्री श्री कोनराड के. संगमा ने असम और मेघालय राज्यों के बीच अंतरराज्यीय सीमा विवाद के कुल बारह क्षेत्रों में से छह क्षेत्रों के विवाद के निपटारे के लिए 29 मार्च को नई दिल्ली में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की उपस्थिति में एक ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शांतिपूर्ण और समृद्ध पूर्वोत्तर के विजन की पूर्ति की दिशा में यह एक और मील का पत्थर है।

इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि आज का दिन एक विवादमुक्त नॉर्थ-ईस्ट के लिए ऐतिहासिक दिन है। उन्होंने कहा कि 2014 में जब श्री नरेन्द्र मोदी जी देश के प्रधानमंत्री बने, तब से मोदी जी ने नॉर्थ-ईस्ट की शांति प्रक्रिया, विकास, समृद्धि और सांस्कृतिक धरोहर के संवर्धन लिए अनेक प्रयास किए हैं, जिसके हम सभी साक्षी हैं। उन्होंने कहा कि 2019 में गृह मंत्री बनने के बाद जब मैं प्रधानमंत्री से मिलने गया तो उन्होंने इन चारों क्षेत्रों में सरकार की प्राथमिकताओं के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि 2019 से 2022 तक का ये सफ़र एक बहुत बड़ा माइलस्टोन हासिल करने में सफल रहा है।

श्री शाह ने कहा कि पिछले तीन वर्षों के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने उग्रवाद को समाप्त करने और पूर्वोत्तर के राज्यों में स्थायी शांति के लिए कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। उन्होंने कहा कि त्रिपुरा में उग्रवादियों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए अगस्त, 2019 में NLFT (SD) समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिसने त्रिपुरा को एक शांत राज्य बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया। फिर 23 साल पुराने ब्रू-रियांग शरणार्थी संकट को हमेशा के लिए हल करने के लिए 16 जनवरी, 2020 को एक ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इसके अंतर्गत 37,000 से ज्यादा आदिवासी भाई-बहन जो कठिन जीवन जी रहे थे, वो आज सम्मानपूर्वक जीवन जी रहे हैं।

श्री शाह ने कहा कि 27 जनवरी, 2020 को हस्ताक्षरित बोडो समझौता किया गया, जिसने असम के मूल स्वरूप को बनाए रखते हुए 50 साल पुराने बोडो मुद्दे को हल किया। असम और भारत सरकार ने इस समझौते की 95 प्रतिशत शर्तों को पूरा कर लिया है और आज बोडोलैंड एक शांत क्षेत्र के रूप में जाना जाता है और विकास के रास्ते पर अग्रसर है। 4 सितंबर, 2021 को असम के कार्बी क्षेत्रों में लंबे समय से चले आ रहे विवाद को हल करने के लिए कार्बी-आंगलोंग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इसके अंतर्गत लगभग 1000 से अधिक हथियारबंद कैडर आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में शामिल हुए।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि आज 50 साल पुराना एक और विवाद इस समझौते के साथ हल होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि बहुत कम समय में आज असम और मेघालय के बीच 12 में से 6 मुद्दों पर समझौता हुआ है और दोनों राज्यों के बीच लगभग 70 प्रतिशत सीमा विवादमुक्त हो गई है।

श्री शाह ने कहा कि जब तक राज्यों के बीच विवाद नहीं सुलझते, सशस्त्र समूहों का सरेंडर नहीं होता, तब तक नार्थ-ईस्ट का विकास संभव नहीं है। उन्होंने दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों और अधिकारियों को प्रधानमंत्री मोदी और केन्द्र सरकार की तरफ़ से धन्यवाद दिया।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के शांत और समृद्ध उत्तर-पूर्व के स्वप्न को साकार करने के लिए आज़ादी के अमृत महोत्सव वर्ष में प्रयास करने चाहिएं। उन्होंने कहा कि 2019 से 2022 तक 6900 से ज्यादा हथियारबंद कैडर ने आत्मसमर्पण किया और लगभग 4800 से ज्यादा हथियार प्रशासन के सामने सरेंडर किए गए। ये एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी उत्तर-पूर्व को अष्टलक्ष्मी कहते हैं और इन प्रयासों से पूर्वोत्तर भारत की मुख्यधारा में तो शामिल होगा ही, साथ ही देश के विकास का ड्राइविंग फ़ोर्स भी बनेगा।

असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा और मेघालय के मुख्यमंत्री श्री कॉनराड संगमा ने दशकों से लंबित इस समस्या का समाधान करवाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री श्री अमित शाह का आभार व्यक्त किया। ■

नागालैंड, असम और मणिपुर में सशस्त्र बल विशेष अधिकार अधिनियम के तहत दशकों बाद कम हुए अशांत क्षेत्र

असम के 23 जिलों को पूर्ण रूप से और 1 जिले को आंशिक रूप से 'आफ्स्पा' के प्रभाव से हटाया जा रहा है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में केंद्र सरकार के निरंतर प्रयासों से उत्तर-पूर्वी राज्यों में ऐसे अनेक कदम उठाये गए हैं जिससे सुरक्षा स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है और विकास में तेजी आयी है। वर्ष 2014 की तुलना में वर्ष 2021 में उग्रवादी घटनाओं में 74% की कमी आई है। उसी प्रकार इस अवधि में सुरक्षाकर्मियों और नागरिकों की मृत्यु में भी क्रमशः 60% और 84% की कमी आई है।

केंद्र सरकार के लगातार प्रयासों से तथा पूर्वोत्तर में सुरक्षा स्थिति में सुधार के परिणामस्वरूप भारत सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम के तहत दशकों बाद नागालैंड, असम और मणिपुर में सशस्त्र बल विशेष अधिकार अधिनियम (AFSPA-आफ्स्पा) के तहत अशांत क्षेत्रों को कम किया है।

दरअसल, प्रधानमंत्री श्री मोदी पूरे उत्तर-पूर्व क्षेत्र को उग्रवाद मुक्त करने के लिए संकल्पित हैं। इस संबंध में केंद्र सरकार समय-समय पर राज्य सरकारों और अन्य हितधारकों के साथ संवाद करती रही है। मोदी सरकार द्वारा सुरक्षा स्थिति में सुधार के कारण आफ्स्पा के अंतर्गत अशांत क्षेत्र अधिसूचना को त्रिपुरा से 2015 में और मेघालय से 2018 में पूरी तरह से हटा लिया गया।

संपूर्ण असम में वर्ष 1990 से अशांत क्षेत्र अधिसूचना लागू है। 2014 में मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद सुरक्षा स्थिति में उल्लेखनीय सुधार के कारण अब 01 अप्रैल, 2022 से असम के 23 जिलों को पूर्ण रूप से और 1 जिले को आंशिक रूप से 'आफ्स्पा' के प्रभाव से हटाया जा रहा है।

संपूर्ण मणिपुर (इंफाल नगर पालिका क्षेत्र को छोड़कर) में अशांत क्षेत्र घोषणा वर्ष 2004 से चल रही है। मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 6 जिलों के 15 पुलिस स्टेशन क्षेत्र को 01.04.2022 से अशांत क्षेत्र अधिसूचना से बाहर किया जा रहा है।

> **केंद्र सरकार के लगातार प्रयासों से तथा पूर्वोत्तर में सुरक्षा स्थिति में सुधार के परिणामस्वरूप भारत सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम के तहत दशकों बाद नागालैंड, असम और मणिपुर में सशस्त्र बल विशेष अधिकार अधिनियम (AFSPA-आफ्स्पा) के तहत अशांत क्षेत्रों को कम किया है। दरअसल, प्रधानमंत्री श्री मोदी पूरे उत्तर-पूर्व क्षेत्र को उग्रवाद मुक्त करने के लिए संकल्पित हैं, इस संबंध में केंद्र सरकार समय-समय पर राज्य सरकारों और अन्य हितधारकों के साथ संवाद करती रही है**

अरुणाचल प्रदेश में 2015 में 3 जिले, अरुणाचल प्रदेश की असम से लगने वाली 20 किमी. की पट्टी और 9 अन्य जिलों में 16 पुलिस स्टेशन क्षेत्र में आफ्स्पा लागू था, जो धीरे-धीरे कम करते हुए वर्तमान में सिर्फ 3 जिलों में और 1 अन्य जिले के 2 पुलिस स्टेशन क्षेत्र में लागू है।

सम्पूर्ण नागालैण्ड में अशान्त क्षेत्र अधिसूचना वर्ष 1995 से लागू है। केन्द्र सरकार ने इस सन्दर्भ में गठित कमेटी की चरणबद्ध तरीके से आफ्स्पा हटाने की सिफारिश को मान लिया है। नागालैंड में 01.04.2022 से 7 जिलों के 15 पुलिस स्टेशनों से अशांत क्षेत्र अधिसूचना को हटाया जा रहा है।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि मोदी जी की अटूट प्रतिबद्धता के कारण हमारा पूर्वोत्तर क्षेत्र, जो दशकों से उपेक्षित था, अब शांति, समृद्धि और अभूतपूर्व विकास के एक नए युग का गवाह बन रहा है, इसके लिए मोदी जी का धन्यवाद करता हूं। साथ ही, इस महत्वपूर्ण अवसर पर पूर्वोत्तर के लोगों को बधाई देता हूं। ■

केंद्र सरकार ने अपने कर्मचारियों का महंगाई भत्ता तीन प्रतिशत बढ़ाया

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 30 मार्च को महंगाई भत्ते (डीए) और महंगाई राहत (डीआर) को तीन प्रतिशत बढ़ाकर 34 प्रतिशत कर दिया। इससे केंद्र सरकार के 1.16 करोड़ कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को लाभ होगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की बैठक के बाद जारी आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार, यह वृद्धि एक जनवरी, 2022 से प्रभावी होगी।

विज्ञप्ति में कहा गया कि यह वृद्धि सातवें केंद्रीय वेतन आयोग की सिफारिशों के आधार पर स्वीकृत फॉर्मूले के अनुरूप है। महंगाई भत्ते और महंगाई राहत के कारण राजकोष पर संयुक्त रूप से 9,544.50 करोड़ रुपये प्रति वर्ष का प्रभाव पड़ेगा। विज्ञप्ति के अनुसार, इससे 47.68 लाख केंद्रीय कर्मचारियों और 68.62 लाख पेंशनभोगियों को लाभ होगा। ■

प्रकृति, संस्कृति और विकृति

पं. दीनदयाल उपाध्याय

'संस्कृति' क्या है? इस संबंध में हमें कुछ मूल तत्त्वों पर विचार करना होगा। 'संस्कृति' शब्द 'कृ' धातु से बना है। 'कृ' का अर्थ है 'कृति'। जो कुछ हम करते हैं, वह सब कर्म ही हमारी 'कृति' है। हमारे प्रत्येक कार्य हमारे स्वभाव के अनुसार होते हैं, इसलिए मनुष्य का सामान्य स्वभाव ही उसकी 'प्रकृति' है। इस 'प्रकृति में यदि कुछ बिगाड़ उत्पन्न हो जाए, तो वह उसकी 'विकृति' होगी और यदि उसके कार्य में सुधार हुआ तो वह 'संस्कृति' हुई। इस प्रकार 'प्रकृति', 'विकृति' भी हो सकती है और 'संस्कृति' भी। 'संस्कृति' में दिशा है और गति भी अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर जब हम बढ़ते हैं तो वह 'संस्कृति' कहलाएगी और इसके विपरीत 'विकृति' होगी। इस प्रकार गतिशील होना या अवगतिशील होना, आगे बढ़ना या पीछे हटना इस बात पर निर्भर है कि हमारा गंतव्य, हमारा लक्ष्य क्या है? हमें जाना कहां है?

वैचारिकी

जीवन के इस निर्धारित लक्ष्य को भली-भांति पहचानकर आचरण करने में अतीव सुख का अनुभव होता है। इस विपरीत लक्ष्य को समझने के लिए हमें मूल-प्रकृति का ही विचार करना होता है। हमारी मूल प्रकृति हमारे लक्ष्य निर्धारण में ही सहायक होती है और तदनुसार हमें सुख-दुःख की अनुभूतियां होती हैं। लक्ष्यानुरूप होनेवाले कार्यों में सुख तथा लक्ष्य विरुद्ध होनेवाले कार्यों में दुःख होता है। इतिहास में रंतिदेव का क़िस्सा आता है। 49 दिन भूखे रहने के बाद भी उनके हाथ से जब कुत्ता रोटी छीनकर भाग गया, तो वे उसके पीछे इसलिए नहीं दौड़े कि वह उनकी रोटी छीनकर ले भागा है, वरन् वे सब्जी लेकर दौड़े, जिससे कुत्ता सूखी रोटी न खाए। कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं, जिन्हें यदि कुत्ता रोटी ले जाए तो उस कुत्ते से रोटी छिनवा लेने में ही आनंद आएगा। भले ही वे स्वयं उस रोटी को न खाएं। इस प्रकार सुखों की अनुभूति में अंतर होता है। अंतर उसकी प्रकृति का द्योतक है, जो परंपरा से रक्त-मांस में प्राप्त होती है। प्रकृति का मूल स्वभाव एक दिन या अवस्था का परिपाक नहीं होता। बीती अनेक शताब्दियां, अनेक पीढ़ियां, पूर्व पुरुषों के अनेक आचरण, जलवायु, प्राकृतिक वायुमंडल और अनेक घटनाओं के संघातों से उत्पन्न सामान्य क्रियाओं के सूक्ष्म प्रभावों से प्रकृति का निर्माण होता है। इस मूल प्रकृति से संबंध विच्छेद नहीं किया जा सकता। अतः संस्कृति का विचार करते समय हमें मूल प्रकृति का ही विचार करना पड़ता है। जाति, धर्म, भूमि, राष्ट्र इतिहास से बनी इस मूल प्रकृति का पालन करने से बहुत कुछ 'संस्कृति' इसी में से प्राप्त हो जाती है। इस मूल प्रकृति में समय, स्थान और परिस्थिति के अनुसार कुछ परिष्कार करने की आवश्यकता समझी जा सकती है, किंतु उसका आधार भी मूल प्रकृति ही रहेगी। मूल प्रकृति को न समझते हुए यदि कोई उपाय योजना की गई, तो संस्कृति तो दूर, कृति ही समाप्त होकर संपूर्ण विनाश उपस्थित हो सकता है। जैसे एक बीज होता है तो उसकी एक विशिष्ट प्रकृति भी होती है। उसे मिट्टी में डालने से अंकुर अवश्य निकलेंगे और जैसा वह बीज होगा, उसके अनुरूप अंकुर निकलेंगे। धीरे-धीरे पौधा बनेगा, वृक्ष बनेगा। माली जो उस बीज की प्रकृति को पहचानता है, बो देता है। एक ओर बीज की प्रकृति में उपस्थित होनेवाली बाधाओं को दूर करता है और दूसरी ओर अधिक अच्छे परिणाम पाने के लिए उचित खाद-पानी की व्यवस्था करता है और पहले से अच्छे फल प्राप्त कर लेता है। किंतु इसके विपरीत कुछ हो तो? जैसे एक शेखचिल्ली का क़िस्सा है। एक शेखचिल्ली था, उसे मोटा-मोटा इतना ज्ञान था कि जैसे बोओ वैसा काटो। उसके पास कुछ भुने हुए चने थे। उसने यह सोचकर अपने पास के सब भुने हुए चने जमीन में वो दिए कि जिससे भुने चनों की अच्छी खेती उसे प्राप्त हो। परिणाम क्या हुआ? उसने चने के बीज की मूल प्रकृति नहीं समझी, अतः पैसे भी खर्च हुए, श्रम भी व्यर्थ गया और मूल में जो कुछ था, उससे भी हाथ धो बैठा। मूल प्रकृति न पहचानकर प्रयत्न करने से ऐसा ही होता है।

मूल प्रकृति का विचार जिस एक प्रश्न के द्वारा सनातन काल से होता आया है, वह है, ''मैं कौन हूं?''

दुनिया में ऐसे लोग हैं, जो इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रकृति के अनुसार तत्काल देते हैं कि ''मैं शरीर हूं।'' वे शारीरिक सुख के लिए पागल रहते हैं। उनका कहना है कि कुछ रासायनिक क्रियाओं से शरीर बना है। शरीर और उसका सुख ही सत्य है। किंतु कई बार शरीर के सब सुख उपलब्ध होने के बाद भी रुचते नहीं। सबकुछ खाने की सुविधा के बाद भी खाया हुआ अंग नहीं लगता। मन की अप्रसन्नता के कारण शरीर शिथिल पड़ जाता है। यह इस बात का द्योतक है कि शरीर ही सबकुछ नहीं है। अब तो पश्चिम के लोग भी इस बात को मानने लगे हैं कि मन की चिंता बड़ी भयंकर चीज़ है। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए मानसिक स्वास्थ्य की भी आवश्यकता होती है। उसी प्रकार हम जानते हैं कि कई बार अपने आप हाथ हिल उठता है। कारण बताया जाता है कि अचेतन मस्तिष्क में कुछ क्रियाएं होती हैं। इस प्रकार बुद्धि का भी विचार सामने आ जाता है। बुद्धि का सुख यदि प्राप्त न हो तो मनुष्य पागल हो जाता है। दिखाई देने से पागल व्यक्ति शरीर से बड़ा स्वस्थ दिखाई पड़ता है। उसमें शारीरिक शक्ति रहती है, किंतु उसे बुद्धि का सुख प्राप्त नहीं होता। इसलिए 'मैं कौन हूं, 'इस प्रश्न का उत्तर 'मैं शरीर हूं' नहीं हो सकता। शरीर, मन, बुद्धि तीनों का विचार आवश्यक है। इसके अतिरिक्त एक चौथी वस्तु भी है, जिसे आत्मा कहते हैं। जब तक इस आत्मसुख की प्राप्ति नहीं होती, तब तक शरीर, मन, बुद्धि के सुख कुछ एक सीमा तक ही सुखकारक हैं। इसलिए शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा चारों का विचार करने पर संपूर्ण मनुष्य का विचार हो सकेगा। शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा की सुखानुभूति प्राप्त करने के लिए निर्धारित की गई दिशा और विकास के अवसरों का निर्धारण ही भिन्न-भिन्न मनुष्य-समाजों की मूल प्रकृति का अंतर स्पष्ट करेगा। ■

- राष्ट्रधर्म, अक्तूबर, 1964

श्रद्धांजलि

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर

(7 मई, 1861 – 7 अगस्त, 1941)

विश्व कवि श्री रवींद्रनाथ टैगोर, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के एकमात्र नोबल पुरस्कार विजेता हैं। श्री टैगोर को गुरुदेव के नाम से भी जाना जाता है। श्री टैगोर एशिया के प्रथम व्यक्ति थे, जिन्हें 'गीतांजलि' के लिए साहित्य के नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री टैगोर दुनिया के एकमात्र ऐसे कवि हैं, जिनकी रचनाओं को दो देशों ने अपना राष्ट्रगान बनाया। भारत का राष्ट्रगान 'जन गण मन' और बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांग्ला' गुरुदेव की ही रचनाएं हैं।

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म श्री देवेंद्रनाथ टैगोर और श्रीमती शारदा देवी के संतान के रूप में 7 मई, 1861 को कोलकाता के जोड़ासांको ठाकुरबाड़ी में हुआ। वे अपने माता-पिता की तेरहवीं संतान थे। बचपन में उन्हें प्यार से 'रबी' बुलाया जाता था। उनकी स्कूल की पढ़ाई प्रतिष्ठित सेंट जेवियर स्कूल में हुई। 1878 में श्री टैगोर ने बैरिस्टर बनने की चाह में इंग्लैंड स्थित ब्रिजटोन के पब्लिक स्कूल में नाम दर्ज कराया। उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में कानून का अध्ययन किया, लेकिन 1880 में बिना डिग्री हासिल किए ही वापस आ गए। उनका 1883 में मृणालिनी देवी के साथ विवाह हुआ। श्री रवींद्रनाथ ने अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, चीन सहित दर्जनों देशों की यात्राएं की। 7 अगस्त, 1941 को देश की इस महानविभूति का देहावसान हो गया।

बचपन से ही लोगों को उनकी कविता, छन्द और भाषा में अद्भुत प्रतिभा का आभास मिलने लगा। उन्होंने पहली कविता आठ साल की उम्र लिखी और 1877 में केवल सोलह साल की उम्र में उनकी लघुकथा प्रकाशित हुई थी। भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नई जान फूंकने वाले युगद्रष्टा श्री टैगोर के सृजन संसार में गीतांजलि, पूरबी प्रवाहिनी, शिशु भोलानाथ, महुआ, वनवाणी, परिशेष, पुनश्च, वीथिका शेषलेखा, चोखेरबाली, कणिका, नैवेद्य मायेर खेला और क्षणिका आदि शामिल हैं।

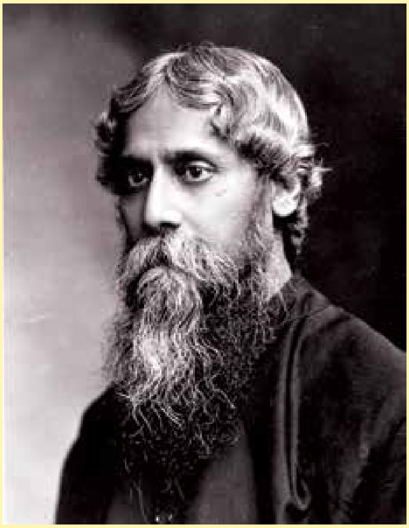

श्री टैगोर दुनिया के एकमात्र ऐसे कवि हैं, जिनकी रचनाओं को दो देशों ने अपना राष्ट्रगान बनाया। भारत का राष्ट्रगान 'जन गण मन' और बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांग्ला' गुरुदेव की ही रचनाएं हैं

बहुआयामी प्रतिभा

श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साहित्य, शिक्षा, संगीत, कला, रंगमंच और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया। मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण वह सही मायनों में विश्व कवि थे। श्री रवींद्रनाथ ने देशी और विदेशी साहित्य, दर्शन, संस्कृति आदि को अपने अंदर समाहित कर लिया था। वह मानवता को विशेष महत्व देते थे। इसकी झलक उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है।

उनके मानवतावादी काव्य ने उन्हें दुनिया में पहचान दिलाई। दुनिया की तमाम भाषाओं में आज भी श्री टैगोर की रचनाओं को पसंद किया जाता है। श्री टैगोर की रचनाएं बांग्ला साहित्य में एक नयी बहार लेकर आईं। साहित्य की शायद ही कोई शाखा हो जिनमें उनकी रचनाएं न हों। उन्होंने कविता, गीत, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि सभी विधाओं में रचना की। उनकी कई कृतियों का अंग्रेजी में भी अनुवाद किया गया है। अंग्रेजी अनुवाद के बाद पूरा विश्व उनकी प्रतिभा से परिचित हुआ। श्री रवींद्रनाथ के नाटक भी अनोखे हैं। वे नाटक सांकेतिक हैं। उनके नाटकों में डाकघर, राजा, विसर्जन आदि शामिल हैं।

श्री रवींद्रनाथ की रचनाओं में मानव और ईश्वर के बीच का स्थायी संपर्क कई रूपों में उभरता है। इसके अलावा, उन्हें बचपन से ही प्रकृति का साथ काफी पसंद था। श्री रवींद्रनाथ चाहते थे कि विद्यार्थियों को प्रकृति के सान्निध्य में अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने इसी सोच को मूर्त रूप देने के लिए शांतिनिकेतन की स्थापना की।

रवीन्द्र संगीत

श्री टैगोर ने करीब 2,230 गीतों की रचना की। रवींद्र संगीत बांग्ला संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। श्री टैगोर के संगीत को उनके साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता। उनकी अधिकतर रचनाएं तो अब उनके गीतों में शामिल हो चुकी हैं। गुरुदेव ने जीवन के अंतिम दिनों में चित्र बनाना भी शुरू किया। इसमें युग का संशय, मोह, क्लांति और निराशा के स्वर प्रकट हुए हैं। मनुष्य और ईश्वर के बीच जो चिरस्थायी संपर्क है उनकी रचनाओं में वह अलग-अलग रूपों में उभरकर सामने आया। अलग-अलग रागों में गुरुदेव के गीत यह आभास कराते हैं, मानो उनकी रचना उस राग विशेष के लिए ही की गई थी। ■

गंगा समग्र
के राष्ट्रीय कार्यकर्ता संगम में

जिला प्रशिक्षण वर्ग
दिनांक : 23, 24 व 25 अप्रैल 2022
स्थान : जैन स्थानक, हस्तिनापुर, मेरठ।

भारतीय जनता पार्टी, उ०प्र०
जिला प्रशिक्षण वर्ग
दिनांक: 27, 28, 29 अप्रैल
जिला: सीतापुर

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
अप्रैल द्वितीय अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी